स्वामिनारायण प्रकाश

सदस्यता शुल्क ₹. 60/-
अगस्त, 2022

नशामुक्ति आंदोलन के कट्टर रक्षक

लाखों व्यसनियों के लिए मुक्ति के मार्गदर्शक

करुणामूर्ति प्रमुखस्वामी महाराज

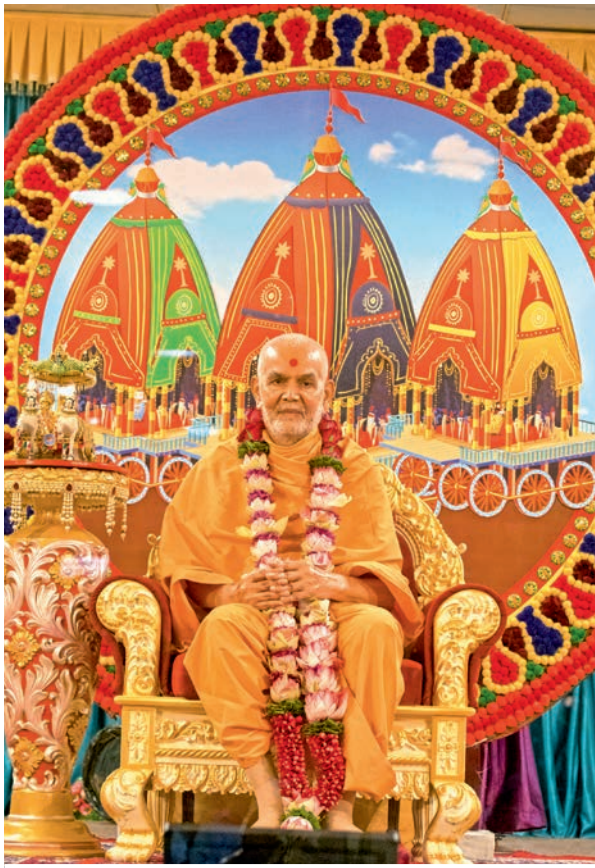

परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की उपस्थिति में 1—7—2022 को अहमदाबाद में भक्ति के साथ रथयात्रा उत्सव मनाया गया। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को श्रद्धांजलि देते गुरुहरि की रथयात्रा की दर्शन स्मृति...

शताब्दी प्रकाश माला
संपादकीय

भगवान स्वामिनारायण का अद्वितीय नशामुक्ति आंदोलन...

जीवन का दूसरा नाम समस्या है। मनुष्य जीवन समस्याओं से भरा रहता है। जीवन भर आधि, व्याधि और उपाधि आदि कई समस्याएं घेरे रहती हैं। कभी-कभी उन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए एक नई समस्या का सामना करना पड़ता है। यही लत है। तनाव को दूर करने के लिए मनुष्य शराब, बीडी-सिगरेट, तंबाकू, ड्रग्स या अन्य व्यसनों का आश्रय लेता है, कभी संगत दोष के कारण, कभी प्रकृति की कमजोरी के कारण, लेकिन एक बार इसकी चपेट में आने के बाद, इससे बाहर निकलना उसे मुश्किल हो जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के इन आंकड़ों से पता चलता है कि नशे की पकड़ कितनी भयानक और घातक है:

दुनिया में हर वर्ष 30 लाख से ज्यादा लोग शराब से सम्बंधित बीमारियों से मर जाते हैं।

शराब के कारण मनुष्य 200 से अधिक बीमारियों और शारीरिक समस्याओं से ग्रस्त हैं।

तंबाकू के कारण हर वर्ष 80 लाख लोगों की मौत होती है। इनमें से 12 लाख लोग धूम्रपान करनेवालों के सेकेंड हैंड धुएं से होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं।

अकेले अमेरिका में धूम्रपान से होने वाली बीमारियों में 300 अरब डॉलर प्रतिवर्ष खर्च होते हैं। यानी 24,000,000,000,000 रुपये का धुंआ सिर्फ बीमारियों से होता है! फिर पूरी दुनिया की यह संख्या कितनी होगी!?

अकेले अमेरिका में शराब से सम्बंधित बीमारियों में 184 अरब डॉलर खर्चे जाते हैं। यानी 15,000,000,000,000 रुपये बर्बाद हो जाते हैं। अगर सिर्फ अमेरिका का आंकड़ा इतना है तो दुनिया में यह आंकड़ा कितना बड़ा होता!?

एक आम आदमी को इस तरह के अरुचिकर व्यसनों से लड़ने और मुक्त होने की ताकत कहाँ से मिल सकती है? वही शक्ति का स्रोत है - अध्यात्म। अगर कोई व्यक्ति सच्चे अर्थों में अध्यात्म या भक्ति के मार्ग की ओर मुड़ता है, तो व्यसन से थोड़ी राहत मिलती है।

200 वर्ष पहले भगवान श्रीस्वामिनारायण ने अध्यात्म के आधार पर लाखों लोगों को व्यसन से मुक्त किया था। इतिहास की दृष्टि से भगवान स्वामिनारायण द्वारा संचालित नशामुक्ति आंदोलन दुनिया का पहला ऐसा आध्यात्मिक आंदोलन था, जिसमें भगवान स्वामिनारायण और उनके 3000 से अधिक परमहंस नशामुक्ति की भावना के साथ गांव-गांव घूमते थे। हालांकि लोगों को व्यसन मुक्त और सदाचारी बनाने का काम आसान नहीं था। क्योंकि धर्म के नाम पर चल रहे व्यसन-भ्रम-अंधविश्वास की दुकानों के व्यवसायी अपनी रोटी छूटने के भय से डरते थे। इसलिए, उन्होंने स्वामिनारायण संतों और भक्तों को परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

श्रीहरिचरित्रचिंतामणि ग्रंथ में भगवान स्वामिनारायण की ऐसी ही एक घटना का उल्लेख है:

भगवान श्रीस्वामिनारायण कालवानी में थे। गांव के पास अमराई में जब सभा हुई तो गांव-गांव जानेवाले साधु उनके आदेश पर आ गए।

उन्होंने श्रीहरि से कहा, 'हम गुजरात, झालावाड़, काठियावाड़ से घूमकर आए हैं। जैसे ही हम नशे से मुक्ति की बात की, दुनिया के कुछ धर्मों के लोगों ने हमें पीटना, मूर्तियों को तोड़ना, तिलक मिटाना शुरू कर दिया। हम जिस गांव में जाते हैं, उससे हमें भगाया जाता है। हम इसे सहन करते हैं। यदि वह बुराई का त्याग नहीं करते हैं, तो हम अच्छाई को क्यों छोड़ दें?

उस समय अन्य साधु आए, कहने लगे कि महाराज! अगर हम सदाव्रत में अन्न देते हैं तो कुछ तथाकथित धार्मिक लोग

आते हैं और गांजा, भांग, अफीम मांगते हैं। हम नहीं देते हैं, तो वे असभ्यता और गाली गलौज से बात करते हैं। तब श्रीहरि ने कहा, 'लीजिए, हम आपको सुख हो ऐसा कर देते हैं।' यह कहकर, उन्होंने स्वामिनारायण भक्ति परंपरा के बजाए साधुओं को परमहंस में दीक्षित किया, फिर कहा, 'आप में से प्रत्येक दस से दस हजार आत्माओं का कल्याण करो।' निष्कुलानंद स्वामी ने कहा, 'अगर यह अधूरा रहता है तो?'

श्रीहरि ने कहा, 'फिर दूसरा जन्म लेकर भी इसे पूरा करें।' और फिर, श्रीहरि के आदेश पर, वह परमहंस व्यसन से मुक्ति का नाद गुंजाते हुए विचरण करने लगे।

आनंदानंद स्वामी, लोगों को भगवान स्वामिनारायण के आश्रित बनाने और व्यसन से मुक्त करने के आदेश के साथ घूमते थे, एक बार डाकोर में उनको बहुत विषमताओं से गुजरना पड़ा। यह सुनकर महाराज ने कहा, 'संतों! तुम्हारे जपमाला रूप शस्त्रों से लोगों के अधर्म टलेंगे, लेकिन यह करने से संतुष्ट नहीं होना है। आपको गांव से गांव जाना पड़ेगा, खेत से खेत तक लोगों को नशामुक्त करना पड़ेगा। उन्हें धर्म और नैतिकता को मोड़कर भगवान की पूजा करने के लिए शुद्ध करना होगा। भगवान के धाम तक पहुंचाना है।'

भगवान स्वामिनारायण भगवान ने अपने संतों को धैर्य और क्षमा देकर गुजरात में जो क्रांति की, वह अद्वितीय थी। वे स्वयं भी घोड़ी पर सवार होकर व्यसन मुक्त जीवन का संदेश देने गांव-गांव घूमते रहते थे। उन्होंने अनगिनत लोगों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और अपने दिव्य प्रभाव से उनके जीवन को बदल दिया।

श्रीहरि एक बार मोराज गांव में गोकलदास गढ़वी के घर गए। यहाँ से विदा लेते हुए श्रीहरि ने उनसे कहा, 'यदि आप भक्ति के साथ सेवा करते हैं, तो हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। आपने हमें संतुष्ट किया है, इसलिए हमें भी आपको अभयदान देना चाहिए।' यह कहते हुए उसे अफीम की लत से मुक्त किया और कहा कि भगवान की कथा का व्यसन रखना।

भगवान स्वामिनारायण ने जिस चेतना को प्रज्वलित किया था, उससे गुजरात में नशामुक्ति का एक महान वातावरण बन गया था। गांधीजी भी इससे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने लिखा है कि यह सुधार (व्यसनमुक्ति का) करना साधुओं का काम है। पहले भी इन (नशेड़ी) को केवल साधुओं द्वारा ही शिक्षा दी जाती थी। स्वामिनारायण ने स्वयं नशेड़ियों को बुरी आदतों से छुटकारा दिलाकर आम लोगों पर अच्छा प्रभाव डाला।

ए कॉम्प्रिहेंसिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया में विद्वान इतिहासकार श्री के. के. दत्त लिखते हैं कि सहजानंदजी के प्रभाव में, लोगों ने शराब पीना, जुआ खेलना, मांस खाना, धूम्रपान करना छोड़ दिया और अपने नैतिक मानकों को बढ़ाया। सहजानंदजी ने लोगों को सादगी से जीने, इच्छाओं को नियंत्रित करने और पवित्र, ईश्वरीय जीवन जीने का जोरदार उपदेश दिया। सहजानंदजी के प्रभाव में कुछ अपराधी जातियों ने चोरी और छापेमारी का धंधा भी छोड़ दिया और अच्छे नागरिक बन गए।

युगविभूति ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज, सबसे बड़े सफल व्यक्ति थे जिन्होंने 200 वर्षों के बाद भगवान स्वामिनारायण के महान आंदोलन को जीवित किया।

40 लाख से अधिक लोगों को व्यसन से मुक्त करनेवाले प्रमुखस्वामी महाराज को जब कोई व्यसनी दिखाई देता तो उनका हृदय करुणा से भर जाता। उसी क्षण वह उसे व्यसन मुक्त होने की प्रतिज्ञा दिला देते। दिन भर की मेहनत के बाद अगर थके हुए स्वामीजी को आधी रात के दो बजे भी कोई व्यसनी मिल जाए तो वह अपनी नींद अधूरी छोड़कर उसे नशे से मुक्त करने के लिए तरोताजा हो जाते। स्वामीजी की आंखों, वाणी और मुद्रा में निःस्वार्थ करुणा, प्रेम और चिंता की

शेषांश पृष्ठ 15 पर

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं, मुच्यते भवबन्धनात्॥

स्वामिनारायण प्रकाश

वर्ष : 40, अंक : 8, अगस्त, 2022

संस्थापक : ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज
सम्पादक : साधु स्वयंप्रकाशदास
प्रकाशक : स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004.

यह पत्रिका प्रतिमास 10 दिनांक को प्रकाशित होती है।

शुल्क : वार्षिक सदस्यता शुल्क : रू. 60/–
यह पत्रिका नियमित रूप से डाक द्वारा प्राप्त करने के लिए शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट 'स्वामिनारायण अक्षरपीठ' के पक्ष में प्रकाशक के पते पर भेजें। किसी भी मास में सदस्य बन सकते हैं।

सम्पादन विषयक पत्रव्यवहार :
prakash@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' संपादन कार्यालय, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

सदस्यता विषयक पत्रव्यवहारः
magazines@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' सदस्यता कार्यालय, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

website :
www.baps.org
magazines.baps.org

शताब्दी स्मृति

करुणा और प्यार भरे शब्दों ने युवक को पिघला दिया...

प्रमुखस्वामी महाराज वडोदरा के अटलादरा में थे। वर्ष 2007 का जन्माष्टमी का दिन था। मुलाकात के दौरान स्वामीजी सभी भक्तों को एक के बाद एक उनकी उलझनों और कठिनाइयों को दूर करते हुए आशीर्वाद, मार्गदर्शन और प्रेरणा दे रहे थे।

स्वामीजी के सामने एक जाना-पहचाना युवा चेहरा आया। उसने अपने हृदय की भावना व्यक्त करते हुए कहा, आशीर्वाद दें हम भजन करते हुए अक्षरधाम में बैठ जाए। यह सुनकर स्वामीजी ने कहा कि आपको ऐसा संदेह क्यों है? हमें भजन करते हुए ही धाम जाना है।

यह सुनकर पास बैठे संत ने कहा कि यह युवक अच्छी सेवा कर रहा है, लेकिन उसे अभी भी तंबाकू की थोड़ी लत है। कुर्सी पर बैठने से पहले स्वामीजी उठ खड़े हुए और युवक को उपदेश देने लगे, 'भला मानुष! इतनी सेवा करने के बाद भी तेरे जीवन में यह सब कहाँ से घुसा?'

जब स्वामीजी उस युवक से बात कर रहे थे, तो सेवक संतों ने अनुरोध किया, पहले आप सोफे पर बैठो। स्वामीजी सोफे पर बैठ गए। लेकिन वह अपनी सीट पर झुके बिना सीधे बैठ गए और बात करते हुए बोले कि व्यसन यह मन की बीमारी है। हमें हजारों लोगों से बात करते हैं अगर उसको इसकी लत के बारे में मालूम हो गया तो बोलेंगे कि आप पहले अपने घर के लड़के को नशामुक्त करो। आज जन्माष्टमी का सबसे अच्छा दिन है, प्रण ले लो छोड़ने के लिए, फिर इसके बारे में कभी नहीं सोचना चाहिए। इस बार नींव रखी। सभी ने व्यसन छोड़ दिया और तुम व्यसन में पड़ गए! इसके बिना कोई नहीं मरेगा। तुम तो समझदार हो।

स्वामीजी की करुणा और प्रेममय हृदय से अमृतवाणी प्रवाहित हो रही थी और स्वामीजी बोलते-बोलते कुर्सी पर अधिक से अधिक सीधे होते जा रहे थे। युवक घुटनों के बल बैठकर बातचीत सुन रहा था। शर्मिंदा, उसने कोई जवाब नहीं दिया।

स्वामीजी ने उनसे कहा कि हम सत्संगी हैं। तो नशा छोड़ने के लिए जीजान से लड़ो। मन को स्थिर रखो। लौंग को मुंह में रखें। कोई समस्या नहीं होगी। स्वामीजी बड़े उत्साह के साथ तेजी से बात कर रहे थे। इन प्यार भरे शब्दों से युवक अंदर ही अंदर पिघल रहा था, लेकिन फिर भी उसे बाहर व्यक्त करने की हिम्मत नहीं हुई। दूसरी ओर, स्वामीजी को बिना सहारे के सोफे पर बमुश्किल बैठे देखकर सेवकों को भी दया आ गई। इसलिए विनती की कि स्वामी बापा! थोड़ा सा सहारा लेकर पहले आराम से बैठें।

स्वामीजी ने तुरंत बातचीत काट दी और कहा कि हम तब आराम से बैठेंगे जब यह लत से छुटकारा पा ले। इसके बिना आराम से कैसे बैठ सकते?

स्वामीजी की इस तीखी बात से युवक थोड़ा हिल गया और कहा कि आज 110 प्रतिशत देना है।

हमें भी 125 प्रतिशत छुडाना है। स्वामीजी ने दो बार जोर से कहा और आशीर्वाद देते हुए कहा, बस, आपके जीव में महाराज बैठेंगे। सेवा करते हो इसलिए सेवा करते हुए धाम ले जाया जाएगा। यह कहते हुए स्वामीजी ने विस्तार से बताया कि कैसे उनके पूर्वजों ने सत्संग किया था और उन्हें गर्व से भर दिया था। अंत में स्वामीजी ने तंबाकू न खाने का नियम दिया और कहा, 'आज सबसे महत्वपूर्ण एक अच्छा काम हो गया है, लेकिन अब अगर आप नशा जारी रखोगे, तो हम आपको अक्षरधाम नहीं ले चलेंगे।'

यह युवा 87 वर्षीय स्वामीजी के इस करुणा वर्षा से भीग गया। स्वामीजी के चरणों में सिर झुकाकर वे मन ही मन कह रहा था, हे स्वामीजी! आप जैसे करुणामय सगे-सम्बंधी मुझे किस पुण्य से प्राप्त हों! मेरे जैसे कई लोग आपके ऋणी हैं। हम एक साथ आपका कर्ज कभी नहीं चुका पाएंगे। ◆

नशामुक्ति आंदोलन के अनूठे पहरी

लाखों व्यसनियों के लिए मुक्ति के मार्गदर्शक करुणामूर्ति प्रमुखस्वामी महाराज

- साधु अक्षरजीवनदास

महुवा पंथक के एक छोटे से गाँव जुनासांगाना के एक सामान्य घर में भरत सिंह नाम का एक युवक अपनी दो पैरोंवाली पालथी के घुटनों को बिना फैलाए फर्श पर दरबारी ठाठ से बिस्तर पर बैठे थे। स्वामीजी उसे शराब और मांस का त्याग करने के लिए समझा रहे थे। पंद्रह मिनट के समझाने के बाद भरत सिंह समझ गए। वे नियमबद्ध हुए। कभी-कभी जब नियम विलुप्त होने के कगार पर हो, तो वापस मुड़ने की प्रेरणा मिले इसी कारण उन्होंने गले में कंठी पहनी।

आज भरत सिंह अनेकों को व्यसनों से मुक्ति दिलाकर सत्संग का नेतृत्व करते हैं।

नशामुक्ति के लिए स्वामीजी का अभियान जोशीला है। निर्व्याज जीवन ही सुखी समाज की नींव है। समाज और व्यक्ति के जीवन में शांति लाने का प्रयास करते हुए, स्वामीजी ने कइयों को व्यसनों से छुटकारा दिलाने के लिए अथक प्रयास किया है।

यह उस समय की बात है जब 1977 की विदेश यात्रा के बाद स्वामीजी मुंबई में बीमार पड़ गए थे। अभी बुखार की मार अनुभव होती थी। एक या दो घंटे खड़े रहने में कमजोरी लगती थी, सांस फूलना और बोलते समय भी हकलाना आदि दिखता था। हालाँकि, उस स्थिति में, स्वामीजी दीवार के आधार पर झुक कर खड़े हो गए, अपने हाथ को लकड़ी की अलमारी पर टिका दिया, क्योंकि उनका शरीर कमजोर था, फिर भी एक भाई की लत को छुड़ाने के लिए वह खड़े थे। उस भाई ने स्वामीजी की शुद्ध करुणा और हृदय की भावनोर्मि में शराब छोड़ दी।

स्वामीजी कभी-कभी लघुशंका करने जाते समय रास्ते में

कोई भी मुमुक्षु जो स्वामीजी के पास आता तो उससे स्वामीजी अवश्य पूछते कि क्या कोई व्यसन है? यदि उत्तर हाँ है, तो बिना देर किए स्वामीजी नवागंतुक से व्यसन मुक्ति के लिए दृढ़ता से बोलना शुरू कर देते और उसे प्रतिज्ञाबद्ध करते...

यदि कोई व्यसनी मिल जाए तो उनके कान पर जनोई वैसे कि वैसी बनी रहती। बात करने लगते और लत छुड़ाने पर ही उन्हें तृप्ति होती! कभी-कभी मोटर में बैठने के लिए जाते समय यदि कोई खबर देता कि स्वामीजी! इस भाई को आशीर्वाद दीजिए, वह शराब पीता है। और आश्चर्य कि स्वामीजी ने एक पैर अंदर रखा हो और दूसरा बाहर यूं ही रख दिया, प्रस्थान कार्यक्रम में देरी भले ही हो रही है, नशेड़ी को नशा छुड़ाने के लिए स्वामीजी को इस बात की जानकारी भी नहीं थी कि वह किस स्थिति में खड़े हैं! और उन्हें शराब की चुंगाल से मुक्त कर दिया। व्यसन छुड़ाने में स्वामीजी कभी कभी तो भोजन का समय भी भूल जाते।

वडोदरा में स्वामीजी जिंकार साहिब के बीमार पिता नटूभाई को आशीर्वाद देने अचानक पहुंचे। दरवाजे पर दस्तक दी। जब तक खुलने का समय हुआ, स्वामीजी बंगले के पहरेदार रामसिंह के पास पहुँच चुके थे। बातचीत से जान लिया कि उसको व्यसन था। स्वामीजी ने ऐसे स्नेह जताकर उससे उपदेश दिया कि उसने अपनी लत छोड़ दी और नियम ले लिया।

जब व्यसनी अपनी लत को सहलाता रहता या व्यसन छोड़ने के लिए कुछ समय-सीमा की ढाल लेता तो स्वामीजी का व्यावहारिक तर्क व्यसनी को एक भी चाल चलने की अनुमति नहीं देता। वसंतभाई नाम के व्यक्ति को दस वर्ष का नशा था। स्वामीजी ने बलप्रद बात की। उन्होंने सहर्ष इस नियम को स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों बाद वसंत भाई शिकायत लेकर आए। स्वामीजी से कहा कि व्यसन छोड़ने से बहुत बुरा हुआ। मेरा हाल खराब हो गया। यह वजन कम होने लगा है। मुझे इसकी चिंता है। मैं क्या करूं?

स्वामीजी ने कहा कि भला भाई, आपका वजन कम हुआ तो उसमें चिंता क्यों करनी है? 40 किलो वजनवाले भी जीते हैं। आप बहुत स्वस्थ हैं। यदि पाप भगवान की दया से चला गया है, तो इसे फिर से शुरू करने के बारे में मत सोचो। जब विचार आए तो भगवान से प्रार्थना करो...। उस भाई में ऐसी शक्ति आई कि अब वह दूसरों को व्यसन मुक्त करने लगा है।

सिगरेट का आदी एक डॉक्टर स्वामीजी के पास आया। स्वामीजी ने उसे समझाया। वे कहते हैं, बिल्कुल नहीं, मुझे दो महीने दीजिए। मैं छोड़ दूंगा।

ऐसे समय में स्वामीजी समझौता कर लेते थे, लेकिन यहां स्वामीजी बोले, 'आप डॉक्टर हैं। यदि आप किसी ऐसे मरीज को समय सीमा देते हैं, जिसे तत्काल ऑपरेशन की आवश्यकता है, तो क्या होगा? धूम्रपान छोड़ दें। आपको पता होना चाहिए कि आपका शरीर नशे से सड़ चुका है।' और सभी को आश्चर्य हुआ कि इस डॉक्टर ने उसी क्षण सिगरेट छोड़ दी।

व्यक्ति और समय को सही ढंग से समझनेवाले स्वामीजी ने इस तरह तर्क के तीर का इस्तेमाल किया।

स्थान, चरित्र और परिस्थितियों के अनुसार दूसरे व्यक्ति को राजी करने की उनकी शैली में स्वामीजी के कई रूप थे। सौराष्ट्र का एक युवक हीरा उद्योग की वजह से सूरत में बस गया। वहां उन्हें तंबाकूवाला पान खाने की लत लग गई। एक महीने के सैकड़ों रुपये के पान खाने लगा। स्वामीजी ने उनसे मुलाकात की और कहा, 'तुम्हें पता है? काठियावाड़ में इतने रुपए में किसी गरीब का घर चल सकता है। शहर की मिठाई में

कभी-कभी अजनबी या दूसरे धर्म के लोग मिल जाते, तो स्वामीजी कुछ ही समय में उनके साथ आत्मीयता का सेतु बांध देते...

यहां की रोटी तो भूलिए ही नहीं। अब इस पाप को दूर करो।' ऐसा कहकर प्रतिज्ञा लिवाई! मानो परिवार का कोई बुजुर्ग तीसरी पीढ़ी के बच्चे को सिखा रहा हो! ऐसा माहौल बन गया। उस भाई का नशा छूट गया और घर में भी खुशियां छा गईं।

स्वामीजी का व्यसनमुक्त करने का तरीका अलौकिक था। कभी-कभी वह सीधे तौर पर किसी को नशा छोड़ने की जिद करते और कहीं पर लंबे समय तक उसे जानने के बाद भी उस पर प्रेम बरसाते। उनकी प्रेम की ऊष्मा से व्यसनी का नशा पूरी तरह से छूट जाता। संसाधन संपन्न घर का एक व्यक्ति कार चला रहा था। उनके बगल में स्वामीजी बिराजमान थे। अचानक गाय सामने आई। तुरंत समय परखनेवाले स्वामीजी ने कहा, 'वाह, देखो, जब आप कार चलानी शुरू की और गाय सामने मिल गई, तो शगुन हो गया, इसलिए अब जीवन में जो भी व्यसन हो उसे तिलांजलि दे दीजिए।' स्वामीजी की बात उस भाई के हृदय में सट गई और सभी व्यसन छूट गए।

बेंगलुरु के अरविंद दवे की कहानी भी सुनने लायक है। यह भाई एक दिन में बारह पैकेट सिगरेट और उतनी ही चाय पीते थे। स्वामीजी का योग उन्हें 1990 की शीत ऋतु में हुआ। आइए सुनते हैं उन्हीं की जुबान से -

''जब मैं पहली बार स्वामीजी से मिलने गया तो सिगरेट फूंककर गया था। शायद उन्हें बदबू आई होगी। हालाँकि, उन्होंने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा! मेरे दाहिने हाथ पर जल रख कर गुरुमंत्र दिया और गले में कंठी लगा दी। फिर बोले, 'अब कंठी धारण की है अत: भगवान का आश्रय हुआ तो भगवान को पसंद हो ऐसा अच्छा नीति में जीवन जीना चाहिए। एलफेल या व्यसन कुसंग छोड़ देना चाहिए नियमित ढंग से पांच माला स्वामिनारायण नाम जप कर करनी चाहिए आप सुखी होंगे।'

ऐसा कहकर उन्होंने मेरे हृदय में जगह बना ली। जब उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मेरी आँखों में देखा तो मुझे लगा कि मेरी लत मुझे छोड़ देनी चाहिए! बस उस दिन से, कौन जाने क्यों, मेरा सिगरेट पीने का मन नहीं हुआ। मैं नशामुक्त हुआ वह बहुत अजीब बात है। मुझे इस बदी से बचाने के लिए मेरे दोस्तों और परिवार ने आकाश और रसातल को एकजुट किया। मेरे प्यारे माता-पिता ने मुझे अपनी आखिरी सांस तक नशे से मुक्त देखने के लिए कोड दिया... लेकिन उन्हें खुश करने के लिए भी मैं लत नहीं छोड़ सका। मुझे खेद है कि वे मुझे चार धाम यात्रा पर ले गए। तिरुपति, द्वारका, डाकोर आदि में ले गए। कोई नशा छूटता नहीं था। उसके बावजूद मैं इसके नागचूड में फंसता रहा। आज स्वामी बापा की कृपा का महत्व समझ में आ रहा है। दरअसल, उन्होंने मुझे बचा लिया।''

स्वामीजी के अमृत झरने में ऐसे अनगिनत हस्तियों ने स्नान किया है।

सूरत का एक प्रसिद्ध हीरा व्यापारी अपने स्नेही के साथ स्वामीजी के पास आया। उनके तीन पुत्रों ने शराब और जुए की अपनी बेलगाम लत में पच्चीस लाख रुपये की पूंजी साफ

कर दी थी। स्वामीजी इस परिवार के साथ बैठे।

स्वामीजी ने कहा, 'आप अधिक कमाने की चाह में पच्चीस लाख खो देते हैं और फिर भी अधिक चाहते हैं, तो आप कर्ज में होंगे। तो आज से ही ये सब बंद कर दें। यह एक लत है इसलिए इसे छोड़ना ही होगा। जुआ देखकर आपका फिर से खेलने का मन करेगा। लेकिन दिमाग को मजबूत रखें। वर्तमान में आप जो फिजूलखर्ची कर रहे हैं, उसमें कटौती करें। अगर आपको पर्याप्त पैसा मिलता है, तो कड़ी मेहनत करते रहें। एक रुपए के लाख रुपए करने की आदत गलत है। गलत तरीके से सारी लक्ष्मी चली जाती है। पुरुषार्थ से आगे आओ। जो बीत गया उसका शोक छोड़ो। यह विचार छोड़ दें कि वह करोड़पति थे। ध्यान रहे कि आप पहले से ही गरीब हैं और मेहनत से आगे आना है, नहीं तो आपके लड़के कुत्तों की तरह पीड़ित होकर मरेंगे। आप तीनों युवा हैं। अच्छा काम करेंगे तो पैसा आएगा। हमने आपको यह सच बता दिया। इसमें हमारा कोई स्वार्थ नहीं है। आपका पैसा आपके पास रहना चाहिए। तुम जिस रास्ते पर चल रहे थे, वह दुख का रास्ता था। हमने देखा है कि करोड़पति भी इससे प्रभावित हैं। तो इससे पीछे हटो। आज ही संकल्प लें। मित्र लुभाएंगे लेकिन दृढ़ रहना। गड्ढों में डालनेवाले बहुत मिल जायेंगे पर ये गड्ढे से बाहर निकालनेवाले आपको कहते हैं...।'

इस प्रकार स्वामीजी ने तीनों भाइयों के जलते संसार पर निर्मली का छिड़काव किया। स्वामीजी के वचन पर विश्वास होने से तीनों का जीवन बदल गया।

स्वामीजी ने जब एक पक्के सत्संगी हरिभक्त के पुत्र के बारे में सुना, जो नियमित रूप से सत्संग कर रहा था और स्वामीजी से व्यसनी के रूप में दृढ़ता से जुड़ा हुआ था, तो वह बहुत उदास हो गए। एक सत्संगी युवक तंबाकू का आदी है इस बात को वे नहीं सुन पाए। उन्हें जानकर बहुत दुख हुआ। युवक को बुलाया, हाथ में पानी देकर व्यसन छोड़ने का आदेश दिया। फिर कहा, 'जी-जान से लड़ो और इसे छोड़ दो। यह पाप आवश्यक नहीं है। क्या तुम्हें तुम्हारे घर पर खाना नहीं देते? फिर इसे खाने की क्या जरूरत है? जब हम लोगों से आदर्श लड़के के बारे में बात करेंगे, तो लोग हमें सुनाएंगे कि आप अपने घर में देखो। आपका सत्संगी लड़का व्यसन करता है तब हमारी आंखें ढल जाएगीं।'

वह युवक स्वामीजी की आंखों से अपनी आंखें नहीं मिला सका। उसने इस नियम को दृढ़ता से स्वीकार कर लिया।

स्वामीजी ने उसको आदेश दिया कि तुम्हें प्रायश्चित्त के रूप में 10 अन्य लोगों को व्यसन मुक्त करना होगा। यह उन लोगों के प्रति स्वामीजी के दृष्टिकोण का एक नमूना है, जिन्हें वे अपना मानते हैं। तंबाकू तो छूट गया लेकिन तब स्वामीजी के साथ उस भाई का आध्यात्मिक सम्बंध और मजबूत हो गया।

स्वामीजी 1987 में खाखरिया से भावनगर जा रहे थे। रास्ते में एक भाई ने साइकिल को उल्टा घुमाया और सड़क पर दंडवत करने लगा। स्वामीजी ने कार को खड़ा रखा, आशीर्वाद दिया। फिर सवाल किया कि आपने इस तरह दंडवत किया है लेकिन तंबाकू और मसाले खा रहे हैं? भाई पान और मसाले खा रहा था। स्वामीजी ने उसको तंबाकू और मसाले न खाने का नियम दिया।

समाज के कल्याण के लिए लोगों की मदद करना स्वामीजी के हर आयोजन का उद्देश्य था।

1988 में, स्वामीजी ने सूखे से प्रभावित पशुओं को बचाने के लिए चार बड़े पशु शिविरों का आयोजन किया। मवेशी मालिक भी इसमें अपने मवेशी रखते थे, इनमें से कई किसान बीड़ी-तंबाकू या हॉकली के आदी थे। लेकिन केटलकैंप में संतों के मिलन से ये व्यसन दूर हो गए। स्वामीजी ने चारों पशु शिविरों का दौरा किया और कहा, 'आदी होने के बजाए, बैलों को अच्छी स्थिति में रखें। इससे कृषि में सुधार होगा और उपज अच्छी होगी तो व्यवसाय में सुधार होगा। लड़के को शिक्षित करने का खर्च उस पर नहीं पड़ेगा। इसलिए आज आपको जो भी लत है उसे छोड़ दें। बीडी पीने से कलेजे में जलन होती है। परिवार में भी सुख नहीं मिलता। यदि आप इस तीरथ पर आए हैं, तो उस कारण से भी पापों को दूर करें। इस सूखे में आपको फायदा है। साथ ही जगह-जगह घास के ढेर लगे हैं। आपकी लत की एक चिंगारी सब कुछ राख में बदल सकती है। क्या तुम उनके कलेजे को जलाना चाहते हो जिनको तुम जिवाने आए हों?'

स्वामीजी की वाणी इतनी जादुई थी कि नशेड़ी अपने व्यसनों से मुक्त हो गए। एक वर्ष तक चले ये केटलकैंप भी नशा मुक्ति के यज्ञ बन गए।

स्वामीजी के दयालु शब्दों ने उस भाई की आँखें खोल दीं।

स्वामीजी व्यक्तिगत ध्यान के साथ-साथ सामूहिक ध्यान भी रखते थे। गांव में एक व्यक्ति का नशा समूह को न बिगाड़ दे इसके बारे में स्वामीजी सोचते थे। स्वामीजी ने एक बार खाखरिया गाँव के सरपंच से कहा था कि आप इस गाँव के मुखिया हैं। यह उकाभाई खुद पान-बीड़ी तंबाकू बेचते थे। अब उन्होंने अपनी दुकान बंद करने का नियम बना लिया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप पांच अन्य लोगों को दुकान खोलने की अनुमति दें। तंबाकू लोगों की जिंदगी

तबाह कर देता है। अगर कोई आपसे गुटका तंबाकू बेचने के लिए दुकान बनाने की इजाजत मांगे तो आप उसको ठुकरा देना। पांच-दस बड़े मानुष को साथ में रखकर कहेंगे तो वह मान लेगा। और गांव में शराब तो हरगिज नहीं प्रवेश करने देना। किसी भी हालत में मना करें। यदि दारू गांव में घुसेगा तो तुम्हारा पूरा गांव बर्बाद हो जाएगा। एकता खत्म हो जाएगी। इसलिए विशेष ध्यान रखें।

जब एक गांव का सरपंच पंचायत चुनाव जीतकर स्वामीजी का आशीर्वाद लेने आया तो स्वामीजी ने कहा, 'आप चुने गए हैं, लेकिन अगर आपको पता भी है कि कुछ लोगों ने वोट नहीं दिया तो भूल जाइए। आवश्यकता अनुसार अन्य कार्य करें। चाहे जो भी हो, उच्च और निम्न के बीच भेदभाव न करें। अफीम देकर वोट पाने की कभी ना सोचें। ऐसी सोच रखनेवाले लोगों को क्या भला करेंगे? और हमें नशे का आदी नहीं होना है। हो सके तो गांव से निकाल दें। खासकर जुआ और शराब। धन और सत्ता पाने के लिए अच्छे सिद्धांत ताक पर नहीं रख सकते। कल पैसा खत्म हो जाएगा और सत्ता भी खत्म हो जाएगी। व्यसनी बनाकर किसी का जीवन बर्बाद करना घोर पाप है।'

झालावाड़ के एक गांव के मुखिया से स्वामीजी ने कहा, 'मुखिया होने का हेतु क्या है? मैं तुम्हें बचपन से जानता हूं। हमें गांव को आदर्श बनाना है।'

गांव का ओझा आया। उससे कहा, 'भाई वरजांग! हम साधु-संतों का क्या काम है? भजन करना और व्यसनों से मुक्ति दिलाना। तो अब तुम सबसे पहले इस लत से छुटकारा ले लो। भगवान का बल रखो।'

कभी-कभी स्वामीजी भी गाँव के लोगों को नशा करने से होनेवाले खर्च के बारे में हिसाब-किताब करके बताते। सूरत शहर के एक इलाके में वह रोजाना लाखों रुपये की शराब पी जाती थी। स्वामीजी ने कहा, 'यदि आप केवल एकादशी के दिन शराब नहीं पीते हैं, तो इससे बची हुई रकम से आपको एक वर्ष में अपने क्षेत्र में एक स्कूल या एक पानी की टांकी या एक छोटा अस्पताल बन जाता!'

दर्शन-मुलाकात के लिए आनेवाले व्यक्तियों में, यदि कोई शराब का उत्पादक आ जाए तो स्वामीजी उसके इस व्यवसाय को छोड़ देने की प्रेरणा अवश्य देते।

खेड़ा जिले के एक गांव में एक भाई हर महीने शराब के कुछ डिब्बे खर्च कर अधिकारियों को किश्त देता था! वह भाई एक हरिभक्त के योग में आया। वह हरिभक्त उसे खींचकर स्वामीजी के पास ले गया। स्वामीजी ने यह जानने के बाद उसे इस भयानक पाप के बारे में अवगत कराया। तब उस व्यक्ति ने यह धंधा छोड़ने का फैसला किया। उसने स्वामीजी को अपना सिर झुकाया और इस व्यवसाय को छोड़ने के अपने निर्णय की घोषणा की। स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए। शक्ति देते हुए उन्होंने कहा, 'बहादुर बनो। भगवान अन्य तरीकों से पैसा देंगे। मेहनत की रोटी खाई जाती है। हमारे पैसे के लालच के कारण हजारों लोग पीड़ित होते हैं। जीवन बिगड़ जाता है। दूसरों को गलत रास्ते पर चढ़ा कर क्या करना है? भगवान रोटी देंगे। परमेश्वर अतीत को क्षमा करेगा, नया नहीं करना है। नशा छोड़ेंगे तो पुराने दोस्त आएंगे, लुभाएंगे, जिद करेंगे, मन को भी ललचाएंगे, पैसे का क्या फायदा? लेकिन दृढ़ रहें। हमें तो दूसरों को निर्व्यसनी करना है। क्या आपके मन में संकल्प है न?'

उसने कहा, 'हाँ बापा।' स्वामीजी ने पानी दिया। मानो अभी कुछ कहना बाकी हो, वैसे फिर स्वामीजी अपराधबोध दिखाते हुए बोले, 'गाँव को पिलाओगे फिर घर में आ जाएगा। शराब पीने का मतलब लड़ाई। इसमें कई बुराइयां हैं, अगर आपको पैसा नहीं मिलता है, तो आपको चोरी करोगे, झूठ बोलोगे, जुआ खेलोगे। यह कमाई आपकी नींद उड़ा सकती है। जहर जहर ही है। इसमें खुशी की रोटी नहीं है। अत: भूमि है, उसमें खेती का परिश्रम करो, आशीर्वाद है।'

वह भाई स्वामीजी के नि:स्वार्थ प्रेम की वर्षा में भीग गए।

कई लोग इस तरह की अटकलों से आकर्षित होते हैं कि स्वामीजी व्यसन को ठीक करने के लिए जड़ी-बूटियाँ रखते हैं। एक व्यसनी भाई स्वामीजी के पास आया। स्वामीजी उनकी भावनाओं पर हंस पड़े। फिर उन्होंने कहा, 'सच तो यह है, भाई, हमने इसके लिए एक दुकान खोली है, हम जड़ी-बूटी लेकर घूम रहे हैं।' ऐसा कहकर उन्होंने धन, स्वास्थ्य, समय, आदि की त्रिपुटी को व्यसन से होनेवाले नुकसान गिनाए, जिसमें तीनों बर्बाद हो जाते हैं। स्वामीजी की बात उनके जीवन में समा गई। स्वामीजी ने ऐसी उस जड़ी-बूटी के लिए कहा ताकि वह कभी व्यसनी होने को नहीं सोचें। अब जबकि वह भाई यह जड़ी-बूटी दूसरों को बांटते हैं!

स्वामीजी ने जोश के साथ एक सदाचारी और व्यसन मुक्त जीवन जीने की बात कही है, जहां भी वे विदेश गए हैं। स्वामीजी कहा करते थे कि सदाचारी जीवन एक हिंदू की विशेषता है। हिंदू का अर्थ है धार्मिकता। उसे शराब नहीं लेनी चाहिए, मांस नहीं खाना चाहिए, जुआ नहीं खेलना चाहिए, व्यभिचार नहीं करना चाहिए, अपने जीवन को पवित्र रखना चाहिए और वेदों और भगवान में विश्वास करना चाहिए। यह तब होता है जब एक सच्चे गुरु द्वारा धर्म की नींव मजबूत की जाती है...।

व्यसन छुड़ाने के लिए एक ही व्यक्ति को कई बार बात करते हुए स्वामीजी अपना धैर्य नहीं खोते। स्थानीय और विदेशी, गरीब और जरूरतमंद सभी से स्वामीजी धैर्यपूर्वक बात करके उन्हें चेतना से भर देते। उनके द्वारा आयोजित विशाल व्यसन मुक्ति यज्ञों ने भी बहुतों के जीवन बदल दिए...

साथ ही, जब स्वामीजी सार्वजनिक स्थानों पर जाते थे, तो वे सार्वजनिक रूप से अपने मुख्य प्रशासकों से यह कहते हुए अनुरोध करते थे कि आप जो भी कार्यक्रम करते हैं, उसमें पवित्रता बनाए रखें। खान-पान शुद्ध हो तो जीवन सफल होता है। पार्टी करें लेकिन शुद्धता बनाए रखें।

ब्रिटेन में एक सामुदायिक केंद्र के एक नेता ने केंद्र बनने तक शराब नहीं पीने का फैसला किया। संयोग से जब सेंटर हॉल बनकर तैयार हो गया तो उन्होंने स्वामीजी के आशीर्वाद से इसका उद्घाटन किया।

स्वामीजी को उनका समर्थन पता था, इसलिए उन्होंने जनसभा में उनकी प्रशंसा की और कहा, 'हम चाहते हैं कि यह पाप उनके जीवन से हमेशा के लिए दूर हो जाए।' स्वामीजी के स्नेह के कारण, उन्होंने कभी शराब न पीने का नियम अपनाया। स्वामीजी ने उनसे कहा, 'हमारा यहां आना सार्थक हुआ। हम पासपोर्ट में हिंदू लिखते हैं लेकिन अब सभी को ऐसा व्यवहार करना होगा। अगर हम संस्कृति-संस्कृति करते हैं, लेकिन शराब की पार्टी में संस्कृति खत्म हो जाती है।'

अमेरिका में स्वामीजी की जनसभाओं का प्रसारण टीवी ऑपरेटरों द्वारा किया जाता था। ऐसी ही एक जनसभा का फिल्मांकन करते हुए, एक भारतीय टीवी चैनल के कार्यकारी अधिकारी, शशी शर्मा और अमित शर्मा ने स्वामीजी का साक्षात्कार लिया। स्वामीजी ने उनसे कहा, 'जीवन में कोई व्यसन मत करो। अगर ऐसा है तो छोड़ देना।' स्वामीजी ने पूछताछ की तो पता चला कि शशी शराब पी रहा था। और अमित धूम्रपान कर रहा था। स्वामीजी ने शशी को बहुत करीब से लिया और बहुत प्यार से बात की। स्वामीजी ने कहा, 'जो कुछ जीवन की आवश्यकता है वो रखो। लेकिन अगर कोई चीज हमें नुकसान पहुंचाती है, तो उसको छोड़ दें, धीरे-धीरे व्यक्ति शराब से ड्रग्स में प्रवेश करता है। इसलिए आज से ही बंद कर दो।' शशी ने नियम स्वीकार कर लिया। अमित ने भी सिगरेट छोड़ दी।

स्वामीजी उन लोगों को भी गोद लेने से नहीं हिचकिचाते, जो आंखों से भी कभी नहीं मिले।

जो अंधे हैं, जिनके पास पथदर्शक नहीं है, वे गड्ढे में गिर जाते हैं, लेकिन जो समाज सुधारक हैं और जनसेवा का डिंडीम बजाते हुए घूमते हैं, फिर भी खुद नशेड़ी होते हैं! ऐसे लोग भी जब स्वामीजी से मिलते हैं, तो उनको स्पष्ट बात

बताने में स्वामीजी कभी हिचकिचाते नहीं।

एक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय समाजसेवा क्लब के क्षेत्रीय डिप्टी गवर्नर ने स्वामीजी से मुलाकात की। स्वामीजी को उनकी शराब की लत के बारे में पता चला। स्वामीजी बोले, 'यदि हमारे भीतर दोष हैं तो समाज सेवा का क्या अर्थ है? पहले आप अच्छा आचरण करें, फिर समाज आपका अनुसरण करेगा। अगर अच्छे लोग वास्तव में अच्छे नहीं हैं तो बाकी दुनिया को बेहतर कैसे बना सकते? अत: आप यह सब छोड़ दीजिए।' स्वामीजी ने चंद क्षणों में उनकी राह बदल दी।

1988 की विदेश यात्रा के दौरान विभिन्न दैनिक पत्रों के मालिक और पत्रकार स्वामीजी के पास आते और प्रश्न करते तब स्वामीजी इन पत्रकारों को सटीक उत्तर देते। एकबार ढ़ेर सारे पत्रकार आए जिन्होंने इसी तरह के प्रश्नों की एक शृंखला की बौछार की, स्वामीजी ने उन्हें संतुष्ट किया फिर अंत में उन पत्रकारों का स्वयं साक्षात्कार लिया! इसमें काफी मात्रा में शराब और सिगरेट देखी गई। स्वामीजी ने उन्हें समझाया, 'लोगों को आपसे उच्च जीवन स्तर की अपेक्षा होती है। अत: आपको शराब नहीं पीनी चाहिए। सुसंस्कार कैसे प्राप्त हो! व्यसन कैसे छुटे! इस विषय पर कुछ लिखकर सबको प्रेरणा प्रदान करें। क्योंकि आपकी कलम द्वारा लिखे गए साहित्य को पढ़कर लोग आपमें से कुछ सीखते हैं, जीवन बनाते हैं, लेकिन आप नशा करते हों, फिर सभ्यता कैसे बनी रहे, व्यसनों से क्यों मुक्त होना चाहिए, शराब नहीं पीना चाहिए, ड्रग्स नहीं लेना चाहिए, धूम्रपान से कैंसर होता है इत्यादि के बारे में लिखोगे फिर भी वह कितने पाठकों को प्रभावित करेगा? तुम खुद पी रहे होंगे, तुम्हारा जीवन उन लोगों द्वारा देखा जाएगा, फिर तुम जो कहोगे वह कितने लोग मानेंगे? इसलिए आप शराब छोड़िए।' वे लोग बोले कि हम कोशिश करेंगे।

स्वामीजी ने कहा, 'आप जहर को जहर मानते हैं तो क्या उसे छोड़ने की कोशिश करते हैं? और जहर पीने के बाद, क्या हमें यकीन होगा कि हम मरे हुए हैं या जीवित हैं? जब आपको पता चले कि लत एक जहर है, तो आपको इसे छोड़ देना चाहिए। क्या आप मानते हैं कि नशा शरीर को नुकसान पहुँचाता है?'

'हाँ।'

अंत में, स्वामीजी की जीत हुई। इस तरह कइयों ने व्यसन-मुक्ति का मार्ग अपनाया।

स्वामीजी को जब पता चलता कि धार्मिक क्षेत्र के मुखिया भी कभी-कभी व्यसन में फंस गए हैं, तो वे उन्हें व्यसन से छुटकारा पाने के लिए अवश्य प्रेरित करते।

एकबार स्वामीजी एक फलाहारी बापू के निमंत्रण पर उनके यहाँ पहुँचे। उन्होंने स्वामीजी को अपने स्थान को पवित्र करने के लिए आमंत्रित किया था। परिसर में घूमने के बाद स्वामीजी ने कहा, 'अच्छा है कि आप फलाहारी उपवास रखते हैं, लेकिन अगर गांजा-तंबाकू पीते हों तो बंद कर दीजिए। गुरु की शोभा आचरण से सम्बंधित है। भजन करो और कराओ, लेकिन आचरण अनुशासन पक्का रखें। यहां जो भी आएं उससे नेकी और सत्संग की बात करना।'

उन्होंने स्वामीजी की बात शिरोधार्य की।

तरेड़ी गांव को सबसे पहले बिजली मिल रही थी, तब स्वामीजी को महुवा के नेताओं ने ज्योति प्रज्वलित करने के लिए आमंत्रित किया। उस गांव के निकट एक मंदिर है। वहां पहुंचकर स्वामीजी ने विद्युतकेन्द्र का उद्घाटन किया। इसके बाद नशामुक्ति दिवस मनाया गया। अंत में स्वामीजी ने पुजारी की तलाशी ली और कहा, 'आप बाबाजी हैं। तुम यहाँ किसी को गांजा-चिलम नहीं देना।'

पुजारी ने कहा कि अगर दूसरे महात्मा आकर मांगें तो मैं क्या करूं? स्वामीजी ने कहा, 'अगर कोई महात्मा आकर एक हीरा मांगे और आपके पास नहीं है, तो आप कैसे दे सकते हैं? कहना कि मैं नहीं पीता। यह हनुमान दादा कहाँ पीते हैं? राम गांजा कहां मांगते हैं? फिर भी लोग दर्शन को आते हैं। यदि आप इसे छोड़ दें, तो वे आपसे मिलने आएंगे। तुम्हें उन सभी को उपदेश देना चाहिए कि ठीक से पूजा करो, भक्ति करो। शत-प्रतिशत मेहनत करो।' स्वामीजी की बात सुनकर बावाजी ने गांजा न पीने का नियम ले लिया।

एक उत्साही विद्वान संकीर्तनकर अफीम लेने के बाद ही कीर्तन कर सकता था। स्वामीजी के योग पर आकर उनकी वृत्ति बदल गई, उन्होंने कहा, 'अब यह लत छोड़ना बिजली के करंट जैसा लगता है!' स्वामीजी ने कहा, 'भगवान का स्मरण करके छोड़ दीजिए। हम आपके लिए प्रार्थना करेंगे। मरजीवे की तरह कोशिश करो। भले शरीर गिर भी जाए फिर भी न लेने का निश्चय करो।' स्वामीजी ने उनके हृदय में आस्था की गांठ बांध दी। उनकी अफीम छूट गई।

एक बार एक दुल्हा स्वामीजी का आशीर्वाद लेने आया और कुछ उपहार देने के लिए जेब टटोलने लगा। स्वामीजी बोले, 'मुझे आपका व्यसन का उपहार चाहिए। व्यसन बंद करो।' स्वामीजी ने उसके होंठ और दांत देखे थे और जानते थे कि वह एक व्यसनी होना चाहिए। दूल्हा राजी हो गया। उसने बीडी तंबाकू छोड़ दिया।

स्वामीजी के अथक प्रयासों से सेलवास-पंचमहल क्षेत्र के

आदिवासियों ने अपने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की है। जहां घरों में शराब बनती थी, चिकन पकता था, सरकार की आर्थिक सहायता भी कम होती जा रही थी, लड़कों की पढ़ाई बिगड़ रही थी, नवजात की घूंटी में शराब पिलाई जाती थी और समाज में समय-समय पर शराब की पार्टियों का आयोजन हुआ करता था - यह सब स्वामीजी के अथक प्रयासों से बंद हो गया। सभी आर्थिक रूप से विकसित हो गए। झोंपडी से मकान बने, लड़के पढ़ने लगे और उच्च जीवन जीने लगे। स्वामीजी की शक्ति और आशीर्वाद से आदिवासियों के पूरे गांव को नशे से मुक्त कर हर तरह से उत्थान हो गया।

स्वामीजी व्यसन को लेकर बहुत सावधान थे। उनके मन बड़े और छोटे में कोई भेदभाव नहीं था। एक व्यक्ति को सुखी जीवन के पथ पर चलने के लिए स्वामीजी में लंबे समय तक धैर्य और उत्साह होता था।

अहमदाबाद का एक 25 वर्षीय युवक जब मुंबई में स्वामीजी से मिला। वह हेरोइन से लेकर तरह-तरह के नशीले पदार्थों के चंगुल में फंस चुका था। इससे निजात पाने में दो वर्ष लग गए। दो वर्ष बाद जब वह सारंगपुर में स्वामीजी से मिला तो पता चला कि उसको अफीम की लत लग गई थी। साथ ही मैंड्रेक्स टैबलेट लेना शुरू कर दिया था। अहमदाबाद में आधा घंटा बैठने के बाद स्वामीजी ने उनसे बात की थी, लेकिन वह फिसल गया। स्वामीजी ने उसको पुन: व्यसन मुक्त होने की शक्ति प्रदान की। फिर एक वर्ष बाद जब स्वामीजी उससे सारंगपुर में मिले तो स्वामीजी ने उन्हें मंदिर में रख दिया। उसके पास अफीम थी, वह स्वामीजी ने छीन ली। चार दिनों तक स्वामीजी भी अडिग रहे और उन्हें बहुत बल दिया। उसका मन दृढ़ हो गया। स्वामीजी के आशीर्वाद से उन्हें खाने की इच्छा हुई। सोने लगा। वह अभी भी छिपकर बीड़ी पीता था। उसने स्वामीजी से स्वीकार किया कि मैं तीन पीता हूँ... अब दो पीऊंगा। स्वामीजी बोले, 'इसकी भी जरूरत नहीं है। उस पाप को दूर करो। जब बीड़ी की तलब लगे तो जेब में लौंग रखना, मुंह में डाल देना..।' ऐसा कहकर उसे शास्त्रीजी महाराज की मूर्ति के पास ले गए। और बोले कि यहां मत्था टेक दो। प्रार्थना करो। आज से बीड़ी भी बंद.. ये गुलाब लो, जब बीड़ी पीने का मन हो तब गुलाब की पंखुडियां खाओ..।

स्वामीजी ने लगातार तीन वर्षों तक एक सामान्य युवा की देखभाल की। उनकी प्रेम वर्षा की तुलना किससे करें!

अफ्रीका के एक भाई ने स्वामीजी से कहा, 'स्वामी, आप मेरी सिगरेट छोड़ने की बहुत जिद करते हैं, लेकिन यह नहीं जाएगी। कहो तो पत्नी को छोड़ दूं, लेकिन मैं सिगरेट नहीं छोड़ूंगा...।' स्वामीजी के अलावा कोई भी शख्स ऐसे लोगों के सामने अपना हथियार डाल देते, लेकिन स्वामीजी जब भी उनसे मिलते तो धूम्रपान छोड़ने के लिए बात करते थे। अंत में उसे चार पैकेट में से दो पैकेट पर ले आए और धीरे-धीरे पांच सिगरेट पर लाए। फिर एक हफ्ते में पूरी तरह से खत्म!

एक बार स्वामीजी सारंगपुर में नियमित रूप से हरिभक्तों से मिल रहे थे। एक भाई आया। स्वामीजी ने कहा, 'क्या कोई लत है?' उन्होंने कहा, 'हां, मैं बीड़ी पीता हूं - वह पीनी चाहिए। इसके बिना जीवन नहीं चल पाता।'

'इसे अभी छोड़ो।' स्वामीजी बोले।

'नहीं, अगर मैं चला गया, तो आत्मा दु:खी हो जाएगी। मैं आत्मा को चोट नहीं पहुँचाना चाहता।'

'यह लत आपको रास्ते पर ले जाएगी।'

'अरे! ऐसा मेरे साथ नहीं हो सकता।'

'भक्त हों तो भी भटक जाते हैं।'

'उन सभी को लत परेशान कर सकती है, मुझे नहीं।'

'तुमने अपना दिमाग खो दिया है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आप कमजोर हैं।'

'मैं तब से पी रहा हूं जब मैं छोटा था, दस वर्ष का था। आज 62 वर्ष हो गए हैं। कुएं पर चरसा चलाते हुए बीच-बीच में विश्राम लेते हुए बीड़ी पीते हैं।'

'क्या तुम अब भी चरसा चलाते हो?'

'फिलहाल मैं नहीं चलाता, लेकिन मुझे बीड़ी रखनी है। मजदूर के आने पर क्या दें? यदि आप एक बीड़ी देते हैं, तो मजदूर काम करना शुरू करेंगे।'

फिर स्वामीजी ने एक रास्ता निकाला और कहा कि आप दिन में 25 बीड़ी पीते हैं तो फिलहाल पांच पीना।

'यह सही है, मैं धीरे-धीरे निकालूंगा।' अंत में स्वामीजी ने उसको व्यसन मुक्त होने का संकल्प दिलाया।

एक श्वेत व्यक्ति जो नियमित रूप से अमेरिका के एक योग केंद्र में जाता था। मुमुक्षु था। रोकी प्रोजेक्ट उसका नाम। स्वामीजी को मिलने आया था। वज्रासन में सामने बैठा। पूछताछ करने पर पता चला कि उसे उपनिषदों का अच्छा ज्ञान था। साथ ही सप्ताह में दो-तीन बार शराब और मांस का सेवन भी करता था और धूम्रपान भी करता था।

स्वामीजी ने उसे यह सब छोड़ने को कहा। वह बोला, 'मैं नहीं छोड़ सकता। मैं कोशिश करूंगा।'

स्वामीजी ने कहा, 'कोशिश मत करो, बस इसे दूर करो। क्या कभी जहर खाने का मन करता है! हम बीड़ी या शराब नहीं लेते, फिर भी शाश्वत आनंद में रहते हैं। हम उत्साहित हैं।'

वह जवाब नहीं दे सका। उसके शरीर और मुंह पर पसीना निकल आया। वह बोल नहीं सकता था, हांफ रहा था। स्वामीजी बोले, 'भाई, आप इतना आध्यात्मिक ज्ञान करते हैं, उपनिषदों का अध्ययन करते हैं और मांसाहार शराब नहीं छोड़ते तो इसे क्या कहा जाए? यदि आप शराब और सिगरेट का सेवन करते रहेंगे तो आप भगवान के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पाएंगे। लत बाध्यकारी है। उसका जरा सा भी अंदाजा हो जाए तो भी वह आगे नहीं बढ़ सकता। यह व्याकुलता आपको हर जगह सताएगी। अत: इसे छोड़ दें।'

उसने कहा, 'मैं आपकी दया की एक बूंद मांगने आया था और आप मुझे समुद्र में डुबाने की कोशिश कर रहे हों।'

यह सुनकर स्वामीजी हंस पड़े।

उसने कहा कि अगर मैं धूम्रपान और शराब छोड़ देता हूं, तो मैं डर, तनाव, शोक, चिंता में फंस जाऊंगा।

स्वामीजी ने कहा, 'यह पहले से ही डरपोक है। बस छोड़ने का विचार ही उसे बेचैन कर देता है! अपने मन में जरा सोचिए कि इसे दूर करने से कुछ होनेवाला नहीं है।' उसके जीवन में पहली बार स्वामीजी जैसे महापुरुष मिले, जो उन्हें आधे घंटे तक प्यार से पकड़े रहे! अंत में उन्होंने ईमानदार होने का वादा किया और पंचांग प्रणाम किया और आशीर्वाद मांगा।

स्वामीजी की आँखों में करुणा थी। उन्होंने गर्मजोशी से आशीर्वाद देते हुए कहा, 'इसे समाप्त करने के बाद, हमें एक पत्र लिखें।' उन लोगों की कोई सीमा नहीं है जो अनजाने में फिसल गए हैं और स्वामीजी के करुणागंगा में डूब गए हैं।

स्वामीजी ने सूरत के महेंद्रभाई का जीवन बदल दिया, जो हर महीने शराब और अन्य व्यसनों पर हजारों रुपये बर्बाद करते थे। एक वर्ष बाद, उनके पिता ने स्वामीजी से कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि मेरा लड़का बदल गया है। 38 वर्ष में वह सुबह दस बजे से पहले नहीं उठने वाला अब कौन जाने क्या हुआ कि हर दिन साढ़े चार बजे उठकर अपने सभी दोस्तों को लेकर गाड़ी से जल्दी मंदिर पहुंच जाता है और वहां भी हाथ में झाड़ू लेकर पूरे मंदिर की सफाई करता है। हर सात बार अलग-अलग पकवान खाने का स्वाद लोलुपतावाला और मांगा न मिलने पर बहुत गुस्साता मेरा बेटा अब पूरी तरह बदल गया है! उसका होटल जाना बंद हो गया! इसे केवल भगवान ही बदल सकते हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है कि शराब बंद हो जाए और सत्संग की दिशा खुल जाए..!'

स्वामीजी की पारदर्शी पवित्रता और संतत्व की विद्युत तरंगों में प्रवेश करने के बाद, मनुष्य की अशुद्धता हमेशा के लिए धुल जाती है। कई शुद्ध व्यक्ति इन तरंगों में शुद्ध होने के बाद कई अन्य लोगों को नशा मुक्त करते हैं। और इसीलिए व्यसन की उत्पत्ति और अंत को समयसीमा और सीमाओं में बांधना कठिन है।

स्वामीजी की प्रेरणा से हरिभक्त भी दूसरों के व्यसन छुड़ाने में लगे हैं। स्वामीजी के शुद्ध जीवन के पाठों ने हरिभक्तों को इतना प्रभावित किया है कि हरिभक्तों के व्यवहार और जीवनशैली ही दूसरों को व्यसन मुक्त करने के लिए कामयाब होने लगती है।

जर्सी सिटी में यूनियन काउंटी हार्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष, ईस्टर्न यूनियन काउंटी बोर्ड के निदेशक श्री जेम्स स्वामीजी से मिले। उन्होंने कहा, 'स्वामीजी! आपके भक्त रतिभाई ने मुझे व्यसन से मुक्त कर भगवान की ओर जाने की प्रेरणा दी है। आपके दर्शन से मैं धन्य हो गया हूं।'

कई बार ऐसा भी होता है कि स्वामीजी में आस्था रखनेवाले डॉक्टर कैफीन के आदी मरीजों को स्वामीजी के पास लाते हैं और उनके जीवन को बेहतर बनाते हैं।

दक्षिण गुजरात के सिदुम्बर में एक शिक्षक सम्मेलन था। यहां के आदिवासियों और अन्य शिक्षकों ने भी नशा छोड़ दिया। जब आचार्य इस शिविर को सम्बोधित करने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने अपनी जेब से एक छींकने वाली सूंघनी की पेटी निकाली और ठाकोरजी के पैरों पर रख दी और कहा कि अगर आज भी ऐसे आदिवासी लोग अपनी लत छोड़ कर सन्मार्ग की ओर रुख करते हैं, तो मैं ब्राह्मण हूं। इन सबको व्यसन मुक्त देखकर मैं भी आज से अपना व्यसन छोड़ देता हूँ।

स्वामीजी की प्रेरणा से भोज गांव के हरिजन व्यसन से मुक्त हो गए। फिर होली के त्योहार पर अपनी व्यवस्था के अनुसार दूसरे गांव में होली खेलने जाते हैं और दूसरे गांववाले होली खेलने के लिए भोज भी आते हैं। वहां हर वर्ष रिवाज के अनुसार शराब परोसी जाती है और सभी पीते हैं। लेकिन व्यसन से मुक्त हुए हरिजनों ने कहा कि हम प्रमुखस्वामी के शिष्य बन गए हैं इसलिए हम शराब नहीं पीएंगे। उनसे प्रेरणा लेकर अन्य गांवों के हरिजनों ने भी शराब न पीने का समर्थन किया।

1985 में अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी की द्विशताब्दी के अवसर पर स्वामीजी की प्रेरणा से लगातार 59 दिनों तक नशामुक्त यज्ञ का आयोजन किया गया। हजारों नशेड़ी नशामुक्त हो गए। इसमें पूर्वी अफ्रीका के केन्याई मंत्री श्री जोसेफ मटुरिया ने हजारों लोगों के सामने जीवन भर शराब नहीं पीने का संकल्प लिया। स्वामीजी ने कहा, 'मटुरिया साहब निर्व्यसनी बने। नशामुक्ति का संदेश लेकर वह अपने देश जाएंगे इधर-उधर जाएंगे, हमारा उत्सव सार्थक हो गया...।'

श्री मटुरिया अक्सर अफ्रीका से स्वामीजी को पत्र लिखा करते थे। दिसंबर 2007 में उन्होंने फिर से बी.ए.पी.एस. शताब्दी महोत्सव में स्वामीजी को धन्यवाद दिया और कहा कि जब मैंने 1985 में स्वामीजी के दर्शन किए, तो यह केवल प्रमुखस्वामी महाराज के प्रभाव के कारण था, उनकी दिव्य शक्ति के कारण मैंने अपना विशेष मित्र - शराब छोड़ दिया। अपने उस मित्र को छोड़कर मुझे एक नया मित्र मिला - प्रमुखस्वामी महाराज। मैं अपने हृदय में इस नए दोस्त के साथ केन्या वापस चला गया। जब से मैंने यहां शराब पीना छोड़ दिया है, तब से मैंने कभी पीना भी नहीं चाहा। आपके द्वारा व्यसन छोड़ने के बाद, कुछ दिनों के लिए उसके लिए लालसा हुई थी, लेकिन प्रमुखस्वामी महाराज की उपस्थिति में शराब न पीने का संकल्प लेने के बाद, भगवान ने मेरे से शराब की इच्छा को दूर कर दिया जैसे कि मैं इसके बिना नहीं रह सकता था। मैं आज भी 22 वर्ष पहले किए गए वादे का पालन करता हूं। इतना ही नहीं, मैंने केन्या में अपने कई दोस्तों को नशे की लत से मुक्त होने में मदद की है। आज मैं स्वामीजी को शराब की लत से मुक्ति दिलाने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मेरी पत्नी मुझसे ज्यादा आपकी आभारी है।

स्वामीजी की व्यसन की उपलब्धि के पीछे क्या रहस्य होगा?

नोरा हॉल, यूएसए के मेयर श्री लैम्बर्टी ने स्वामीजी को हमारे हृदय की चाबी भेंट की। फिर कहा कि 'हम इस हृदय की चाबी उसी विभूति को देते हैं जो सबके हृदयों पर राज करने में सक्षम हैं। यह परम प्रिय उच्च विभूति के सम्मान की कुंजी है।' यह कहते हुए उन्होंने कहा कि मैं आज को प्रमुखस्वामी दिवस के रूप में घोषित करता हूं। फिर वे स्वामीजी से बात करते हुए बोले, 'हम आपसे विशेष आशीर्वाद चाहते हैं कि हम नशा उन्मूलन अभियान में बार-बार हारे हैं। कोई सफलता नहीं मिली। हमें कोई रास्ता दिखाओ।' स्वामीजी ने कहा, 'हम भगवान से प्रार्थना करेंगे। वे सब कुछ अच्छा करेंगे। क्योंकि सर्वोच्च अधिकार भगवान का है। अगर हमें अपने प्रयासों के बावजूद कोई फल नहीं दिखाई देता है, तो हमें उसे भगवान पर छोड़ देना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए।'

इस जवाब से मिस्टर लैम्बर्टी दंग रह गए। उन्होंने मादक द्रव्यों के दानव का मुकाबला करने के लिए तीन उपाय अपनाए थे: (1) प्रचार (2) मनोवैज्ञानिकों द्वारा उपचार (3) कानून और दंड। इस पर उन्होंने कहा, 'चौथा उपाय स्वामीजी ने बताया कि भगवान से प्रार्थना। हमें विश्वास है कि हम इससे अवश्य सफल होंगे...!'

स्वामीजी ने कहा, 'भगवान की आराधना करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। अच्छे काम के लिए भगवान से प्रार्थना अमोघ शक्ति है।'

यह प्रमुखस्वामी महाराज की अनूठी शक्ति थी जिसने व्यक्तिगत रूप से 40 लाख से अधिक लोगों को व्यसन मुक्त कर भगवान में विश्वास होने में मदद की। इसलिए उन्होंने भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया और लोगों को व्यसनों से मुक्त किया और शाश्वत शांति का मार्ग प्रशस्त किया। आज लाखों लोग और उनके परिवार स्वामीजी को विस्मय और कृतज्ञता के साथ याद करते हैं। स्वामीजी के इस अविस्मरणीय जीवन परिवर्तन की कई कहानियों में से कुछ का ही उल्लेख यहाँ किया गया है, लेकिन उस समुद्र की अपार गहराई को कभी कोई नहीं माप सकता। हम केवल उनके चरणों में प्रणाम कर सकते हैं। ◆

पृष्ठ 4 का शेषांश

भावना इतनी प्रबल है कि सामने वाला व्यक्ति उसमें भीगने के लिए बाध्य हो जाता।

स्वामीजी के प्रभाव से व्यक्ति ही नहीं, पूरा समाज और गाँव व्यसन से मुक्त हो गया है। स्वामीजी के नशामुक्ति का दायरा राष्ट्रीय और विदेशी राष्ट्रीय नेताओं से लेकर पत्रकारों, उद्योगपतियों, उच्च पदस्थ अधिकारियों, वैज्ञानिकों और आदिवासियों व किसानों तक फैल गया है। बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संगठन की विभिन्न सेवा गतिविधियों के साथ चौबीसों घंटे भक्तिमय जीवन जीनेवाले स्वामीजी इतने लोगों को कब व्यसन मुक्त करते होंगे? ऐसा एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है, लेकिन स्वामीजी ने घर-घर जाकर, गाँव-गाँव जाकर धार्मिकता और व्यसनमुक्ति की पाठशाला खोल दी थी। हैरानी की बात यह है कि स्वामीजी के उस स्कूल में तैयार हजारों बी.ए.पी.एस. बच्चे भी लाखों लोगों को नशे से मुक्त करते हैं! स्वामीजी की शताब्दी के अवसर पर महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से स्वामिनारायण प्रकाश का यह अंक स्वामीजी की नशामुक्ति की अनूठी लोक सेवा पर प्रकाश डालता है, जिसमें बच्चों द्वारा बच्चों की गतिविधियों के लिए की गई अद्वितीय नशामुक्ति सेवा का लेखा-जोखा है। आइए, इसकी गहराई में जाएं और स्वामीजी के महान कार्यों से प्रेरणा लें।

- साधु अक्षरवत्सलदास ◆

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी पर्व के अवसर पर
बी.ए.पी.एस. बालप्रवृत्ति मध्यस्थ कार्यालय द्वारा आयोजित

नशामुक्ति और प्रकृति संवर्धन

एक महान अभियान

30,000 से अधिक प्रशिक्षित
बच्चों और बच्चियों द्वारा बनाया गया चमत्कार

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण ने दिखाया है कि आध्यात्मिकता का पहला कदम धार्मिकता है। सनातन हिंदू धर्म के श्रुति-स्मृति शास्त्रों के सार के रूप में, उन्होंने सद्गुण के नियम देकर जीवन में सदाचार पालन एवं व्यसन मुक्ति को प्रथम स्थान दिया है। आज से 200 वर्ष पहले उन्होंने नशामुक्ति के एक विशाल आंदोलन का नेतृत्व किया और समाज में क्रांति लाकर सनातन हिंदू धर्म की नींव को मजबूत किया। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने नशामुक्ति के स्वामिनारायण आंदोलन का सबसे बड़ा काम किया था। ऐसा अनुमान है कि उन्होंने अपने जीवनकाल में 40 लाख से अधिक लोगों को व्यसन मुक्त करके पवित्र जीवन का पाठ दिया था।

इसीलिए, प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर, उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की प्रेरणा से बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्थान की बाल गतिविधियों द्वारा बड़े पैमाने पर व्यासनमुक्ति अभियान का आयोजन किया गया। स्वामीजी की पर्यावरण सेवाओं के साथ, ने भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में बी.ए.पी.एस. बालिका प्रवृत्ति द्वारा एक प्रकृति संरक्षण अभियान भी शुरू किया। इन दोनों कार्यक्रमों में 30,000 से अधिक प्रशिक्षित लड़कों और लड़कियों ने भाग लिया। इस महान आंदोलन की एक झलक यहां प्रस्तुत है।

नशामुक्ति अभियान का आयोजन

परम पूज्य महंतस्वामी महाराज के आदेश के तहत और पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी के मार्गदर्शन में यह नशामुक्ति अभियान बी.ए.पी.एस. बाल गतिविधि मध्यस्थ कार्यालय के संतों - विश्वस्वरूपदास स्वामी, भगवत्सेतुदास स्वामी, निर्मलवदनदास स्वामी, प्राज्ञपुरुषदास स्वामी के साथ-साथ क्षेत्रीय संतों और बाल कार्यकर्ताओं द्वारा तैयार किया गया था। फरवरी 2022 से इस अभियान की तैयारी पूरे गुजरात और महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि राज्यों में शुरू की गई थी। देश भर में कुल 4,300 बालमंडलों से 16,000 बच्चों का चयन किया

गया। कक्षा 5 से 8 तक पढ़नेवाले इन सभी बच्चों को 4,200 समूहों में बांटा गया था।

प्रत्येक समूह में समूह-नेता के रूप में एक कार्यकर्ता और 3 अन्य बच्चे बातचीत में शामिल हुए। प्रत्येक समूह के लिए एक नशामुक्ति किट तैयार की गई। साथ ही प्रत्येक वर्ग को आवश्यक सामग्री और साहित्य दिया गया।

अभियान में भाग लेनेवाले बच्चों का ड्रेस कोड भी तैयार किया गया था। बच्चों को सफेद कुर्ता-पाजामा पर लाल रंग की कोटी, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के प्रतीक के साथ डिजाइन की गई टोपी और भाल पर तिलक-चांदला के साथ अभियान में शामिल होना था। इस अभियान में चुने गए सभी बच्चों को अभियान प्रशिक्षण 1-5-2022 से प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में, बच्चों को कठिन परिस्थितियों में स्थिरता और धैर्य बनाए रखने के व्यावहारिक ज्ञान के बारे में बताया गया। 7 मई तक, गुजरात और अन्य सभी राज्यों में बच्चों को नशामुक्ति अभियान पर जानकारी और प्रशिक्षण प्राप्त हो चुका था।

नशामुक्ति अभियान का शुभारंभ

गर्मी की छुट्टियों का मतलब बच्चों के लिए मनोरंजन का समय! लेकिन इस वर्ष बी.ए.पी.एस. बाल मंडल के बच्चों ने प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलने और समाज में व्यसन मुक्ति संदेश फैलाने की ठानी। 8-5-2022 को गुरुहरि महंतस्वामी महाराज ने सूरत में इस अभियान की शुरुआत की। उस समय स्वामीजी ने बच्चों को प्रबल आशीर्वाद देते हुए कहा, 'आगे कदम बढ़ाएं...' बाल योद्धाओं ने गुरुहरि के इस आदेश का पालन करते हुए समाज में व्याप्त व्यसनों के खिलाफ युद्ध शुरू किया।

8 से 22 मई 2022 तक चले इस अभियान में 1.6 लाख लोगों तक बच्चे पहुंचे। परिणामस्वरूप, देश भर में 4,00,000 व्यक्तियों ने जीवन भर नशा मुक्त रहने का संकल्प लिया।

बच्चों का समूह पूर्व व्यवस्था के अनुसार घरों, दुकानों और निजी कार्यालयों में पहुंच गया। यहां उन्होंने व्यसनियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया। छोटे-बड़े कारखानों, कार्यालयों में, बच्चों ने सभी कर्मचारियों को इकट्ठा किया और उनका सामूहिक रूप से संपर्क किया। शहर या गाँव में सार्वजनिक उद्यानों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टेशनों, रुचि के स्थानों आदि जैसे सार्वजनिक स्थानों पर, बालयोद्धा अधिक समूहों में जाकर एक साथ बड़े समूहों में लोगों से संपर्क करते थे।

घर, कार्यालय या संपर्क स्थल पर पहुँचने पर बच्चे पहले परिचय देते और पूछते कि क्या आपको कोई लत है? यदि व्यक्ति तंबाकू, सिगरेट, गुटखा, शराब, नशीली दवाओं या मांस, अंडे जैसी बुराइयों का आदी है, तो बच्चे उन्हें इससे दूर रहने के लिए कहते। जीवन छीना जा रहा है - सावधान! नामक वास्तविक और वैज्ञानिक जानकारी देनेवाली पुस्तिका के आधार से सभी को व्यसन से मुक्त होने और व्यसन छोड़ने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित करते। छोटे बच्चों की मासूमियत और प्यार भरी बातों का प्रभाव तब मालूम होता था जब वह आंखें बंद कर हाथ जोड़कर भगवान से व्यसनी को नशे से मुक्ति की शक्ति देने की प्रार्थना करते थे। बच्चों ने सभी को व्यसनों और नशे की लत से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया और उन्हें भी दूसरों को निर्व्यसनी बनाने के लिए प्रेरित किया।

इन नन्हे-मुन्नों ने, अपना कीमती जीवन बर्बाद करनेवाले लाखों व्यसनियों से संपर्क कर उन्हें सच्ची समझ दी, व्यसनों से होने वाली तबाही के बारे में बात की और लत से छुटकारा दिलाया। इसके लिए बच्चे बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटरों में घूमते रहे। जीआईडीसी, एपीएमसी, बीमा कंपनियों, कॉलेज परिसरों और प्रतियोगी परीक्षा कक्षाओं, हीरा कारखानों, हीरा बाजारों आदि में भी नशामुक्ति संपर्क अभियान ज़ोर-शोर से चलाया गया। जेल, पुलिस थाना, सरकारी कार्यालय, नगर निगम कार्यालय, बैंक आदि हर सरकारी कार्यालय में बच्चे उत्साह के साथ पहुंचे। मिल मजदूरों से लेकर मंत्रियों तक, कर्मचारियों से लेकर भण्डारियों तक, इन बच्चों की पुकार सबके कानों में गूँज रही थी।

जनसंपर्क के समय ये बच्चे सभी के पास पहुंचे। कई लोगों को मौत से बचाने के लिए इन बच्चों को नशे के कारण होने वाली भयानक शारीरिक और आर्थिक कठिनाइयों से अवगत कराया गया। 'मुर्दा बोलता है' नामक एक मार्मिक नुक्कड़-नाटक भी इस बातचीत का एक हिस्सा था। नतीजतन, कई लोग नशे से लड़ने के लिए दृढ़ हो गए।

प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलकर इन बच्चों ने बरसों पुराने अनियंत्रित व्यसनों से व्यसनियों को मुक्त किया। नशेड़ी के परिवारवाले इन बच्चों का घर में स्वागत करते, उन्हें बिठाते, उनकी सुनते। ऐसे घरों में अनुभव के बारे में बात करते हुए, सूरत का एक बच्चा कहता है कि जब कोई व्यसनी नशा न करने की कसम खाता, तो उनके परिवारों के चेहरे पर खुशी देखकर हमें और भी अधिक घरों में पहुंचने की ताकत मिलती। दूसरों की खुशी के लिए छुट्टी का मजा छोड़ कर, इन सभी फरिश्तों को ग्रीष्म की भीषण गर्मी में भी घर-घर घूमते हुए देखकर, सभी कहते कि सच्चे भगवान हमारे घर में इन बच्चों के रूप में आए हैं।

बिल्कुल अनजान चेहरों के सामने रेलवे स्टेशन से बस स्टेशन तक पहुंचकर इन नन्हे-मुन्नों ने उन अजनबियों को अपनी जीवन-यात्रा को सही मंजिल तक ले जाने के लिए प्रेरित किया तब कई लोग गदगद हो गए। उनके लिए जिंदगी में एक ऐसा स्टेशन आया, जीवन बदल गया...

नशामुक्ति प्रदर्शन

नशामुक्ति अभियान के तहत हर जगह नशामुक्ति का प्रदर्शन आयोजित किया गया। संस्था द्वारा तैयार की गई इस पोस्टर प्रदर्शनी में शराब, तंबाकू और धूम्रपान के साथ-साथ मस्तिष्क, रक्त वाहिकाओं, हृदय, फेफड़े, यकृत, पेट, आंतों, तंत्रिका तंत्र के रोगों से होनेवाले कैंसर की हृदय दहला देने वाली प्रस्तुति दी गई। शराब-तंबाकू-गुटखा की लत से मरनेवाले व्यक्ति के बिखरे परिवार के दृश्य, व्यसनों से होने वाली पीड़ा, हानि और व्यथाएं तथा तकरार, झगड़ा और आर्थिक हिंसा के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं का विवरण सभी हृदय को छू लेनेवाले थे। धूम्रपान से होने वाली मौतों की संख्या दुनिया में हत्याओं की संख्या से 54 गुना अधिक है; आत्महत्या से 30 गुना ज्यादा; मधुमेह से होने वाली मृत्यु से 12 गुना अधिक; हर दिन धूम्रपान आदि से 2,000 लोगों की मौत दिखाने वाली छवियां नशेड़ी को सोचने पर मजबूर कर देती थीं।

पोस्टर भी शराब के सेवन से होने वाली दुर्दशा के बारे में बहुत कुछ बता रहे थे। इन पोस्टरों को देखकर लोगों में शराब को कभी हाथ न लगाने की प्रेरणा प्राप्त हुई। नशा मौत का न्यौता है! उनका प्रेजेंटेशन भी लाजवाब था। इसी तरह, अंडे और मांस मानव भोजन नहीं है, उसे दिखानेवाले पोस्टर प्रेरक थे।

इन प्रदर्शनों के 350 सेट लोहे के स्टैंड के साथ पहुंचाए गए थे। इन प्रदर्शनियों को सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ निजी परिसरों में भी आयोजित किया गया, जिससे लाखों लोगों को लाभ हुआ और नशामुक्ति के बारे में जागरूकता पैदा हुई।

नशामुक्ति अभियान का फल

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का ऋण चुकाने और गुरुहरि महंत स्वामी महाराज को प्रसन्न करने के लिए संस्था के 16,000 बच्चों के 4200 समूह घूम रहे थे। स्वास्थ्य, धन और संस्कार को नष्ट करनेवाले गुटखा, तंबाकू, सिगरेट, शराब, मांस आदि व्यसनों के चंगुल से लोगों को मुक्त कराने के लिए बाल योद्धाओं ने अपने हृदय और दिमाग को एक साथ रखा, समय और स्थान की परवाह छोड़ दी,

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर बी.ए.पी.एस. बाल गतिविधियों द्वारा आयोजित

एक विशाल नशामुक्ति यात्रा

हर वर्ष लाखों लोग व्यसनों से प्रभावित होते हैं। 31 मई 2022 तंबाकू निषेध दिवस को बी.ए.पी.एस. संस्था की बाल गतिविधियों द्वारा हर जगह विराट नशामुक्ति यात्रा का आयोजन किया गया।

समाज में व्याप्त व्यसनों के प्रति सभी को जागरूक और सक्रिय करने के लिए आयोजित यह नशामुक्ति यात्रा मुंबई, दिल्ली, पुणे, हैदराबाद, कोलकाता, उदयपुर आदि शहरों में आयोजित की गई। कुल 100 से अधिक छोटी और बड़ी नशामुक्ति यात्राएं आयोजित की गईं। व्यसनों के विनाशकारी प्रभावों को दर्शाने वाला प्रेरक प्रदर्शन, नशामुक्ति को प्रेरित करने वाली रचनात्मक झांकियां, बच्चों-लड़कियों द्वारा नारा लगाना आदि इस यात्रा के मुख्य आकर्षण थे। व्यसन से होने वाली तबाही के बारे में आकर्षक डायरेमा, प्रदर्शन और कहानियों ने सभी को प्रेरित किया। इसी प्रकार बालिकाओं एवं महिला समूहों ने भी कोमल पोशाक में झण्डा फहराकर यात्रा की शोभा बढ़ाई। नशामुक्ति यात्रा में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों और संतों ने भी भाग लिया, यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया और अंतर से सराहना की।

मुंबई में पांच अलग-अलग जगहों पर आयोजित नशामुक्ति यात्राओं को देख हर कोई हैरान रह गया। इस यात्रा के फलस्वरूप अनेक लोगों ने नशामुक्त होने का संकल्प लिया।

अहमदाबाद के शाहीबाग के बी.ए.पी.एस. मंदिर से नशामुक्ति यात्रा का उद्घाटन करते हुए गुजरात राज्य के गृहमंत्री श्री हर्षभाई संघवी ने कहा कि बी.ए.पी.एस. संगठन द्वारा वर्षों से नशामुक्ति, वृक्षारोपण आदि जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं, जिससे गुजरात के युवाओं को एक सही और अच्छी दिशा मिलती है।

महंतस्वामीजी जिस प्रकार प्रमुखस्वामी महाराज के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, उसके लिए मैं आज भी सभी की ओर से संस्था को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की पहल पर आयोजित नशामुक्ति यात्रा में देश के कुल 50,000 बच्चों और कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मान-अपमान में स्थिरता बनाए रखी और आशाओं और अपेक्षाओं पर अंकुश लगाया। इन बच्चों ने करीब 14 लाख लोगों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया। इन सभी ने मिलकर उन्हें नशे से मुक्त होने और दूसरों को भी नशे से मुक्त होने में मदद करने के लिए प्रेरित किया। पन्द्रह दिनों के भगीरथ कार्य में लगे बच्चों के मामूली प्रयासों से 4,00,000 व्यक्तियों ने जीवन भर नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। ये सभी ठीक होनेवाले व्यसनी, और वे सभी निर्व्यसनी लोग, अपने संपर्क में आनेवाले दूसरों को नशामुक्त होने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध थे।

इस अभियान से समाज को लाभ तो होगा ही, साथ ही अभियान में शामिल बच्चों ने भी जीवन भर नशामुक्त रहने की ठानी। अभियान के परिणामस्वरूप, इन बच्चों में आत्मविश्वास, संचार, नेतृत्व, टीम वर्क आदि का प्रशिक्षण प्राप्त करके कई गुप्त शक्तियां प्रकट हुईं। देश और समाज के हित के लिए कुछ करने, समाज की नि:स्वार्थ सेवा, गुरु को प्रसन्न करने के सर्वोच्च आदर्शों के बीज इन बच्चों के हृदयों में बोए गए थे।

सचमुच ब्रह्मस्वरूप प्रमुचस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलते हुए इन बच्चों ने उनके नशामुक्ति आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है। स्वतंत्रता के अमृत वर्ष में भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए इन बच्चों द्वारा किया गया सामाजिक उत्थान कार्य इतिहास में अमर रहेगा।

टिमटिमाते हम बाल सितारे

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष पर और प्रकट गुरुहरि परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के आशीर्वाद से, समय और परिस्थितियों की परवाह किए बिना लोगों को व्यसन से मुक्त करने के लिए बी.ए.पी.एस. के बालतारकों का उत्साह आसमान छू रहा था।

भीषण गर्मी में, 16,000 बच्चे गर्मी की छुट्टियों को लात मारकर गुरुवर्यों को प्रसन्न करने के लिए भगवान के दूत के रूप में अभियान में शामिल हुए। किसी का स्वागत हुआ तो किसी का अपमान, लेकिन जागरूकता की ज्योति लेकर निकले इन बच्चों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई।

लाखों समान विचारधारावाले लोगों तक पहुंचना, उनसे व्यसन से मुक्त होने की भीख मांगना एक चुनौती थी। आइए, यहां कुछ ऐसी ही घटनाओं का लुत्फ उठाते हैं और उन बहादुर चाइल्ड स्टार्स की सराहना करते हैं।

■ कई बच्चों ने इस अभियान में शामिल होने के लिए पारिवारिक यात्राएं रद्द कर दीं, कुछ ने करीबी रिश्तेदारों की शादियों में जाने से परहेज किया, कुछ ने मनोरंजक गतिविधियों को छोड़ दिया। इस अभियान के दिनों में किसी ने तपस्या करके अभियान को सफल बनाया। अहमदाबाद के रानिप क्षेत्र के मेघांश सुहागभाई चौहान की 47 डिग्री सेल्सियस तापमान में भी हल्की एकादशी रही। यद्यपि प्रत्येक बच्चे को एकादशी के दिन फलाहारी उपवास करने की अनुमति होती है, लेकिन इस बच्चे ने इतनी गर्मी में सजल उपवास किया और लगभग 50 व्यक्तियों से संपर्क किया। कुछ ने बीमारी की परवाह किए बिना इस अभियान में सेवा की। अभियान के दौरान अत्यधिक गर्मी के कारण सूरत के हरिकृष्ण मियानी को दस्त-उल्टी हो गई। कार्यकर्ता ने उसे आराम करने की सलाह दी। आराम कर इस बच्चे ने अकेले 100 से ज्यादा लोगों को नशा मुक्ति का संदेश दिया। अकलूज (पूणे ग्रामीण) में कार्तिक मोहन भोले नाम का एक बच्चा संपर्क के लिए निकला। संपर्क के दौरान उसे एक कुत्ते ने काट लिया। फिर भी इलाज मिलने के बाद बच्चा उत्साह के साथ दोबारा संपर्क में जुट गया।

■ अहमदाबाद के मोतीबाग का निवासी अथर्व 7 दिनों के नशामुक्ति अभियान के बाद साइकिल चलाते हुए गिर पड़ा। फलत: उसका पैर टूट गया, कार्यकर्ता ने उसे आराम करने के लिए कहा। लेकिन अथर्व ने उसी ही दिन में फ्रैक्चर पट्टी के साथ 50 से अधिक लोगों को नशामुक्त कर दिया।

अनादर में निरंतरता

■ अहमदाबाद सरसपुर प्रक्षेत्र में बच्चे वृन्द प्रशासक से बातचीत कर रहे थे, जहां कुछ लोगों को नशामुक्ति की बात समझ में नहीं आई। तो बच्चों को रोक दिया गया, इतना ही नहीं, मानवता की सीमा से परे उन लोगों ने बच्चों पर छोटे-छोटे पत्थर फेंके। हालांकि, बच्चों को चोट नहीं आई। स्थिति को भांपते हुए बच्चे तुरंत वहां से चले गए। कुछ दूर जाने के बाद फिर संपर्क शुरू कर दिया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

■ नशामुक्ति संपर्क के लिए अकलूज (पूणे ग्रामीण) में नीरा नदी के तट पर एक मंदिर के पास खड़े बच्चों को कुछ असंतुष्टों ने गालियां देकर बच्चों को मारने का भय जताया। बच्चों ने उस स्थान को छोड़ दिया और कहीं और सेवा में शामिल हो गए।

■ सूरत के उतराण एरिया में एक टेम्पो चालक ने व्रज पंसुरिया और उनकी टीम से कहा कि पहले आप सब इस सामान को उतारने में मेरी मदद करें, फिर मैं आपकी बात सुनूंगा। बच्चे तैयार हो गए और करीब 90 से 100 किलोग्राम सामान उतार दिया। तब बच्चों ने उस आदमी से नशे की लत

रेहड़ी-पटरी करनेवालों या रिक्शा चलानेवालों से लेकर फुटपाथ पर बैठे पुलिसकर्मियों तक बच्चे घूमते रहे। कहीं पर अपमान हुआ, कहीं पर सम्मान हुआ, लेकिन बच्चों में एक ही जुनून था - प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्ह पर चलना और लोगों को नशामुक्ति की दिशा में मार्गदर्शन करना। काले पत्थर जैसे लोग उसकी ललक से पिघल गए...

छुड़ाने की बात की, लेकिन उस आदमी ने उसे डांटा और बच्चों को भगा दिया। फिर भी इन बच्चों ने उस आदमी की लत छूटे उसके लिए प्रभु प्रार्थना की।

■ सूरत के कपोदरा इलाके में बच्चे मजदूरों से संपर्क करने गए तो कुछ मजदूरों ने बच्चों को खाने के लिए गुटखा और मावा देना शुरू कर दिया और बच्चों के मुंह पर बीड़ी का धुआं उड़ाने लगे। फिर भी बच्चों ने हार नहीं मानी और संपर्क जारी रखा।

■ मणिनगर के आठ वर्षीय तीर्थ हिंगू ने एक जगह बैठे 7 युवकों से चर्चा शुरू कर दी। तीर्थ ने सातों युवकों के तीखे सवालों का संतोषजनक जवाब दिया। इतना ही नहीं, उन्हें नशा न करने और उसके लिए प्रतिज्ञा लेने के लिए भी राजी किया। इस छोटे से बच्चे की कालीघेली भाषा सुनकर युवक भी दंग रह गए।

व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएं

■ अहमदाबाद में बच्चों का एक दल मोबाइल बाजार में संपर्क करने गया। वहां बच्चों ने नशामुक्ति और प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के बारे में मोबाइल दुकान के मालिक से बात की। दुकान का मालिक बच्चों के प्रदर्शन और काम से अभिभूत था और बहुत खुश था। उन्होंने बच्चों से आग्रह किया कि वे अपनी पसंद का कोई भी मोबाइल मुफ्त में लें। लेकिन बच्चों ने इसे स्वीकार करने के शिष्टाचार से इनकार कर दिया और गुरुहरि की प्रसन्नता प्राप्त की।

■ विक्रोली (मुंबई) रेलवे स्टेशन पर बच्चे नशामुक्ति अभियान पर गए तब एक मुस्लिम व्यक्ति फैज राजा, बच्चों के संपर्क में आया। वह फोन पर बात कर रहा था, लेकिन बच्चों को देखकर उन्होंने फोन काट दिया और बच्चों की बात सुनने लगे। उन्हें सिगरेट की लत थी। बच्चों ने नशा नहीं करने की बात कही और आशीर्वाद कार्ड दिया तो यह मुस्लिम भाई बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने सिगरेट न पीने का नियम ले लिया। इतना ही नहीं, उन्होंने महंतस्वामी महाराज की छवि देखी और पूछा कि क्या यह आपके गुरु हैं? बच्चों ने हाँ कहा। यह सुनकर उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और कहा कि अल्ला ताला उन्हे लंबी उम्र दें।

■ नालासोपारा (मुंबई) के बच्चों का एक समूह नशामुक्ति अभियान के लिए एक नकली आभूषण की दुकान पर गया। दुकान के मालिक शोएब खान थे। उन्होंने प्यार से बच्चों का स्वागत किया। बच्चों की बातें सुनकर उन्होंने व्यसन त्याग दिया, उसके साथ ही आस-पास की दुकानों से अन्य मुस्लिम भाइयों और कुछ दोस्तों को बुलाया। 24 मुस्लिम भाइयों को बच्चों से नशे की लत छुड़ाने की प्रतिज्ञा दिलाई।

■ अहमदाबाद के मणिनगर इलाके में जगड़िया ब्रिज के पास बच्चे बातचीत करते थे। वहां बच्चे ट्रैफिक ड्यूटी पर तैनात एक पुलिसकर्मी के पास पहुंचे। बच्चों की बातों से पुलिसकर्मी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने बच्चों को वहीं खड़े रहने को कहा। फिर ड्यूटी के दौरान तैनात वाहन चालकों को नशे की बात सुनने के लिए बच्चों के पास भेजने लगे। इस तरह उन्होंने 45 मिनट में कुल 28 वाहन चालकों को बच्चों के माध्यम से नशामुक्ति का संदेश दिया।

■ अहमदाबाद के राजबाग इलाके में एक 76 वर्षीय व्यक्ति बच्चों के संपर्क में आए। बच्चों ने उन्हें बताया कि हम प्रमुखस्वामी महाराज के संगठन के बच्चे हैं और हम नशा मुक्ति के लिए संपर्क कर रहे हैं। तब वह व्यक्ति भावुक हो गए और उन्होंने एक बात कही कि मैं आज से 30 वर्ष पहले प्रमुखस्वामी महाराज से मिला था। उस समय मुझे लत लग गई थी। प्रमुखस्वामी महाराज ने मुझे व्यसन छोड़ने के लिए राजी किया। उन्हीं पर विश्वास करके मैंने 40 वर्ष पुराना नशा छोड़ दिया। उस दिन से लेकर अब तक मुझे कभी कोई नशा नहीं हुआ। मेरा व्यसनमुक्त जीवन बनाने के लिए प्रमुखस्वामी महाराज का बहुत-बहुत धन्यवाद।

■ वडोदरा जी.आई.डी.सी. में कृतम टेक्नोसोल्युशन के मालिक सागरभाई श्रॉफ से कार्यकर्ताओं ने संपर्क किया और नशामुक्ति अभियान के लिए उनकी कंपनी के बाहर एक बड़े स्थान की पेशकश की। यहां दोपहर तीन से छह बजे तक नशामुक्ति प्रदर्शन का आयोजन किया गया। सागरभाई ने पास की कंपनी से संपर्क किया और वहां के कर्मचारियों को प्रदर्शनी देखने के लिए आमंत्रित किया। वह एक बच्चे से बहुत प्रभावित हुए और कहा कि यह बच्चा बहुत अच्छा समझाता है। भविष्य में, जब यह बच्चा बड़ा हो जाएगा, तो मैं उसे अपनी कंपनी में नौकरी की पेशकश करूंगा।

■ न्यु रानीप (अहमदाबाद) के तुषार चौहान के घर कोई स्वामिनारायणीय सत्संग नहीं है। उनके पिता तंबाकू के आदी थे। इस नशामुक्ति अभियान की शुरुआत से ही तुषार की अपने पिता को लत से छुटकारा दिलाने की तीव्र इच्छा थी। इसलिए तुषार अपने परिवार के बच्चों को लेकर संपर्क के लिए अपने घर पहुंचा। तुषार ने अपने पिता को नशे पर एक किताब से तंबाकू से होनेवाले नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने पानी देकर जीवन भर नशामुक्त रहने का संकल्प भी लिया। उनके बेटे के समझाने का असर ऐसा हुआ कि उन्होंने मैनेजर से कहा कि तुषार जैसा बेटा पाकर मैं अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली मानता हूं। तुम उसे मंदिर ले जाओ और पवित्र कर्म करो, इससे उसका भविष्य उज्ज्वल होगा। मेरे पड़ोसी बहुत से लोग मुझसे तुषार को स्वामिनारायण के सत्संग में नहीं भेजने के लिए कहते हैं, लेकिन फिर भी मैं उन्हें कभी नहीं रोकता।

■ सूरत में बच्चे सुनीलभाई इटली की हीरा फैक्ट्री में संपर्क करने गए थे। सुनीलभाई बच्चों की बातों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने यह बात फैक्ट्री के सभी कर्मचारियों को बताई और घोषणा की कि जो कोई भी लत छोड़ेगा उसे 500 रुपये और दिए जाएंगे।

■ बच्चों ने अहमदाबाद के वासना बस स्टैंड के पार्किंग परिसर के सुरक्षा गार्ड को प्रेरित किया। उन्होंने नशामुक्ति की प्रतिज्ञा ली। अगले दिन सुरक्षा गार्ड ने बच्चों को देखा और उन्हें सामने से यह कहते हुए बुलाया कि उन्होंने कल कोई नशा नहीं किया था। अगले दिन उन्होंने बच्चों को यह कहते हुए धन्यवाद देना शुरू किया कि वह व्यसन के बारे में पुस्तक के माध्यम से दूसरों को व्यसन मुक्त करने के लिए प्रेरित करेंगे कि मैं एक दिन में 25 से 30 रुपये बचाता हूं। इस पैसे से मैं अपने परिवार के लिए सब्जियां खरीदता हूं। आपका बहुत बहुत धन्यवाद!

■ सावरकुंडला के एक इलाके में बच्चों की मुलाकात एक ऐसे शख्स से हुई जो 40 वर्ष से मांस खा रहा था। बच्चों ने भावनात्मक रूप से उसे प्यार भरे शब्दों में मांस न खाने के लिए मना लिया। इस भाई का हृदय परिवर्तन हुआ और उसने तुरंत ही जीवन भर के लिए मांस-मटन का त्याग कर दिया।

■ मणिनगर में भटक रहे बच्चों को 67 वर्षीय महेंद्रभाई मिले, जो 42 वर्ष से तंबाकू के आदी थे। बच्चों ने नशे के बारे में उनको बताया। उन्होंने कहा, 'मैंने कई बार कोशिश की लेकिन लत नहीं छूटती। लेकिन आज आप बात कर रहे हैं तो अब मैं नशा नहीं करूंगा।' यह कहकर वह काफी इमोशनल हो गए।

■ वडोदरा के कमाटीबाग में एक व्यक्ति को जब बच्चों ने नशामुक्ति अभियान के बारे में बताया तो उसने अपना परिचय देते हुए कहा, 'मैं एक सरकारी कर्मचारी हूं। मेरा बेटा एमबीए फाइनल ईयर में है। बुरी संगत ने मुझे शराब का आदी बना

व्यवसाय में या सरकारी कार्यालयों में, बच्चों ने उत्कृष्ट प्रतिभा प्रदर्शित की। चाहे वह उच्च सरकारी अधिकारी हों, हीरा व्यापारी हों या कपड़ा-किराने वाले, सभी को कालीघेली भाषा में समझाते हुए बच्चों की प्रस्तुति ने हृदय को छू लिया और नशामुक्ति का उन्होंने संकल्प लिया...

दिया है। तो बच्चे शराब के भयानक परिणामों के बारे में बताने लगे। जैसे ही बच्चे बोलते रहे, उस आदमी की आँखों से आँसू बहने लगे। वह फूट-फूट कर रोने लगा और बालकों के सिर पर हाथ रखकर बोला कि वास्तव में तुम भगवान बनकर आए हो। आज से मैं शराब को हाथ भी नहीं लगाऊंगा। यह कहते हुए उसने कसम खाई।

■ वड़ोदरा के मोची सुभाषभाई शाम को जब दुकान का स्टॉक ले रहे थे तो बच्चे नशामुक्ति की बात करने लगे। सुभाष भाई ने पहले तो सुनने से इनकार कर दिया। लेकिन बच्चों के कहने पर वह सुनने को तैयार हो गए। बच्चों ने नशे से होने वाली तबाही के बारे में बताया। धीरे-धीरे वे शिथिल हो गए। उन्होंने कहा कि किसी के विश्वासघात के कारण, मुझे शराब की लत लग गई। तब बच्चों ने समझाया कि आप अपने परिवार और शरीर को किसी के विश्वासघात के लिए क्यों दंडित कर रहे हैं? यह बात उन्हें छू गई। उन्होंने व्यसन से मुक्त होने की कसम खाई और कार्यकर्ता से कहा कि भगवान आज मेरी दुकान पर आए हैं!

■ अर्जुनभाई और उनकी पत्नी दोनों वडोदरा एसटी बस स्टैंड से सूरत जा रहे थे। तभी बच्चों ने उनसे संपर्क किया और नशे के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि मुझे दिन में नशे की 15 पुड़ियां लेने की लत है। मैं लत छोड़ना चाहता हूं। उसके लिए मैंने कई तीर्थ किए हैं, लेकिन मुझे अभी भी राहत नहीं मिल रही है। उनकी पत्नी ने भी कहा कि मैं भी आदी हूं। अगर मैं इसे नहीं लेती, तो मुझे रात को नींद नहीं आती और मेरा शरीर टूटता है। एक हफ्ते बाद अर्जुनभाई का फोन आया और कहा कि मेरी पत्नी पूरी तरह से नशे की लत से मुक्त है। उन्हें कोई दिक्कत नहीं है। और मैं भी 15 की जगह 3 पुडियाँ ही खाता हूँ। और मुझे विश्वास है कि यह लत भी छूट जाएगी। और वाकई! 15 दिनों के बाद दोनों ने अपनी लत से पूरी तरह छुटकारा पा लिया। वे कहते हैं, 'स्वामिनारायण भगवान, प्रमुखस्वामी और महंत स्वामीजी ने इन बच्चों को हमें व्यसन मुक्त करने के लिए भेजा होगा!'

अभियान से बच्चों को हुआ फायदा

इस अभियान ने बच्चों के जीवन के विकास में एक

बच्चों ने फैक्ट्रियों और बड़े औद्योगिक घरानों में पहुंचकर बड़ी संख्या में कर्मचारियों को संबोधित किया। बच्चों की प्रस्तुति से फैक्ट्री मालिक से लेकर अधिकारी और मजदूर सभी दंग रह गए। प्रदर्शनी की प्रस्तुति के साथ-साथ बच्चों की प्रेममयी प्रस्तुति ने सभी को व्यसन मुक्ति के लिए दीवाना बना दिया...

महान अध्याय का निर्माण किया। कई मायनों में बच्चों को यह अभियान व्यक्तिगत रूप से और एक परिवार के रूप में बहुत फायदेमंद लगा। अहमदाबाद के रायपुर बालमंडल का एक बच्चा आठवीं कक्षा में पढ़नेवाला कीर्तन नशामुक्ति अभियान से सीधे उसी ही वर्दी में स्कूल प्रवेश साक्षात्कार के लिए पहुंचा। साक्षात्कार करनेवाले शिक्षकों ने पूछा, 'तू ये कपड़े पहनकर क्यों आया?' कीर्तन ने शिक्षकों को नशामुक्ति अभियान और प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के बारे में बताया। वह कीर्तन के भाषण से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने कीर्तन को अपने स्कूल में कक्षा 9 में अपनी मनचाही कक्षा में प्रवेश दिया। स्कूल में इंटरव्यू पूरा करने के बाद कीर्तन फिर से नशामुक्ति अभियान में वह शामिल हो गया।

इस अभियान की वजह से कई बच्चों में प्रार्थना और भगवान में आस्था बढ़ी हैं। कई बच्चे जिनके पास पारिवारिक सत्संग नहीं है, वे अभियान में शामिल हुए तो उनके परिवार भी व्यसन या मांसाहार से मुक्त हो गए हैं। कई बच्चे बोलने में आत्मविश्वासी हो गए हैं और कई बच्चों में साहस का विकास हुआ है। इस प्रकार, यह अभियान बच्चों के जीवन निर्माण के लिए एक अनूठा साधन बन गया।

कार्यकर्ताओं का समर्पण

इस अभियान में संतों और कार्यकर्ताओं ने बहुत बड़ा योगदान दिया। इस योजना की सफलता हर जगह कार्यकर्ताओं के समर्पण के कारण है। मुंबई के एक बाल कार्यकर्ता जगदीशभाई प्रजापति ने इस अभियान के लिए एक शादी के लिए एक रिश्तेदार के घर जाने के लिए कन्फर्म टिकट रद्द कर दिया। नवसारी के विजयभाई जगुभाई सोंडागर अपने हीरा तराशने के व्यवसाय के लिए प्रतिदिन नवसारी से सूरत बस यात्रा करते। सुबह सात बजे घर से निकलते और रात साढ़े आठ बजे घर लौट जाते। 13 से 14 घंटे के काम और यात्रा तथा शारीरिक कष्टों के बावजूद, वह उत्साहपूर्वक नशामुक्ति अभियान में शामिल हुए। भले ही दीप मुकेशभाई पटेल सीएस (कंपनी सचिव) परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, फिर भी वह जनता के साथ बातचीत करने के लिए पूरे दिन बच्चों की टीम में शामिल हुए और परीक्षा की तैयारी के लिए सुबह 12

से 3 बजे तक ऑनलाइन अध्ययन किया। अहमदाबाद के इसनपुर में रहनेवाले दोनों भाई राहिल और ऋषित जब 10वीं की ट्यूशन क्लास छोड़कर अभियान में शामिल होने के लिए तैयार हुए, तो ट्यूशन क्लास के संचालकों ने उनके दृढ़ संकल्प को देखते हुए बैकअप लेक्चर की व्यवस्था की। भावनगर के धर्मेंद्रभाई गोहेल परिवार में सबसे बड़ा बेटा होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर है। उनके पिता को मधुमेह में हर दिन उतार-चढ़ाव होता रहता है। किडनी और आंख में गंभीर चोट के कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

साथ ही परीक्षा भी नजदीक आ रही थी। इसी दौरान नशामुक्ति अभियान का प्रशिक्षण, संपर्क एवं रैली का आयोजन किया गया। लेकिन धर्मेंद्रभाई इन सभी सेवाओं में अंत तक मौजूद रहे। पिताजी को जब डॉक्टर बुलाता था तब अस्पताल ले जाने की पूरी जिम्मेदारी उस पर थी। उनके पिता को इस दौरान इलाज के लिए राजकोट और भावनगर के अलग-अलग अस्पतालों में ले जाना पड़ा। हालांकि, इस स्थिति के बीच भी, अगर वह भावनगर में हैं, तो वह तुरंत सेवा में शामिल होंगे। वडोदरा के महेशभाई का पैर, प्रचार शुरू होने से करीब 20 दिन पहले एक सीढ़ी से गिरने के कारण टूट गया था। कोई अन्य व्यवस्था न होने के कारण, 71 वर्ष के महेशभाई के एक पैर में प्लास्टर लगा होने के बावजूद, बच्चों के साथ उन्होंने अभियान पर जाना शुरू कर दिया। सुबह और शाम दोनों समय पैर में फ्रैक्चर और सूजन से पीड़ित होने के बावजूद, वह सेवा में लगे रहे। कभी-कभी सुबह जल्दी जाना पड़ता या देर शाम को, फ्लैटों में 4-4 मंजिल चढ़ना पड़ता। हालांकि महेशभाई पीछे नहीं हटे।

इस प्रकार महंतस्वामी महाराज की प्रेरणा से प्रमुखस्वामी महाराज के महान नशामुक्ति आंदोलन को आगे बढ़ानेवाले बच्चों, उनके माता-पिता, कार्यकर्ताओं आदि के समर्पण से यह अनूठा अभियान चलाया गया, जिसका फल आनेवाले कई वर्षों तक सभी को मिलता रहेगा। ◆

अहमदाबाद-जगतपुर में निर्माणाधीन शिखर युक्त मंदिर के प्रथम स्तंभ की पूजा करते स्वामीजी

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के संकल्प को परिपूर्ण करनेवाले एक अधिक शिखर युक्त मंदिर का निर्माण कर रहे हैं। 13-4-2021 (गुड़ी पड़वा) के पवित्र दिन, स्वामीजी ने पश्चिम अहमदाबाद के जगतपुर में शिखर युक्त मंदिर की शिलान्यासविधि की, तब से पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी के मार्गदर्शन में इसका निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है।

इस निर्माणाधीन बी.ए.पी.एस. शिखर युक्त मंदिर के पहले स्तंभ की पूजा स्वामिनारायण मंदिर के प्रांगण में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के करकमलों से 13-6-2022 को हुई। इस अवसर पर पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने परम पूज्य स्वामीजी की ओर से स्तंभ-पूजन किया। फिर पूज्य स्वामीजी ने पहले अक्षर-पुरुषोत्तम महाराज की पूजा करके फिर दोनों स्तंभ पर पुष्प-अक्षत पधराए।

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की पावन निश्रा में आयोजित स्तंभ-पूजन के इस अवसर पर अहमदाबाद के बी.ए.पी.एस. मंदिर के महंत पूज्य डॉक्टर स्वामी के अलावा पूज्य कोठारी भक्तिप्रियदास स्वामी, पूज्य त्यागवल्लभदास स्वामी, पूज्य विवेकसागरदास स्वामी, पूज्य घनश्यामचरणदास स्वामी और अन्य वरिष्ठ संत उपस्थित थे। ईश्वरचरणदास स्वामी ने मंदिर निर्माण प्रक्रिया और इसमें योगदान देनेवाले संतों, दानदाताओं, स्वयंसेवकों का परिचय दिया। स्वामीजी ने सभी पर कृपादृष्टि की और उन्हें आशीर्वाद दिया।

जगतपुर में मंदिर की जगती पर स्वामीजी द्वारा पूजे गए इन स्तंभों की वैदिक स्थापना, 1-7-2022 को रथ यात्रा के शुभ दिन पर पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी और पूज्य विवेकसागरदास स्वामी के हाथों से संतों और भक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से की गई। ◆

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के अवसर पर

बी.ए.पी.एस. बालिकाप्रवृत्ति की 14,000 लड़कियों ने धारण किया

प्रकृति संवर्धन अभियान

बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की प्रेरणा से आज तक कई आयामों में पर्यावरण सेवाएं हो रही हैं। अब तक देश-विदेश में लाखों पौधे रोपकर वृक्षवन संवर्धन हुआ है। अपने जीवन और भारत की आजादी के अमृत उत्सव के जरिए बी.ए.पी.एस. के माध्यम से सभी को पानी और बिजली बचाने का संदेश देनेवाले विश्व वंदनीय प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्थान की बालिकाओं की गतिविधि द्वारा प्रकृति संवर्धन अभियान का आयोजन किया गया।

छुट्टियों में छोटी बच्चियां मौज मस्ती करने अपने ननिहाल के घर जाती हैं। लेकिन इस वर्ष बी.ए.पी.एस. बालिकामंडल की छात्राओं ने प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलकर समाज में प्रकृति संरक्षण का संदेश फैलाने का निश्चय किया। 8-5-2022 को गुरुहरि महंतस्वामी महाराज ने सूरत में इस अभियान का उद्घाटन किया।

बी.ए.पी.एस. संगठन की 14,000 लड़कियों के 3300 समूह देश भर में प्रकृति संवर्धन अभियान की जागृति के लिए जुट गए। देशभर में हुए इस अभियान में लड़कियों ने घर-घर जाकर तीन मुख्य संदेश दिए-

1. टपकनेवाले नलों को बंद करके, कपड़े धोते समय पानी की बर्बादी न करके और आरओ के अप्रयुक्त पानी का उपयोग करके पानी बचाने का संदेश।
2. अनावश्यक पंखे-लाइट और एलईडी को बंद करके रोशनी और सौर ऊर्जा के इस्तेमाल से बिजली बचाने का संदेश।
3. एक पेड़ लगाने और उसकी देखभाल करने का संदेश।

इस अभियान के लिए लड़कियों ने ग्रीष्म की गर्मी का डटकर मुकाबला किया। खेलकूद और मौज-मस्ती को तिलांजलि देकर सामाजिक जागरूकता के लिए पुरुषार्थ किया। किसी का सम्मान किया गया और किसी का अपमान किया गया। फिर भी, इन लड़कियों ने गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज का कर्ज चुकाने और गुरुहरि महंत स्वामी महाराज को प्रसन्न करने के लिए व्यक्तिगत रूप से 13 लाख लोगों से संपर्क किया।

बच्चों के नशामुक्ति अभियान के समानांतर, 8 मई से 22 मई 2022 तक लगातार 15 दिनों तक चले इस अभियान के प्रेरक परिणाम मिले। लड़कियों के प्रयास से 12 लाख लोगों ने पानी और बिजली बचाने और 7.5 लाख लोगों को पेड़ लगाने और संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध किया। साथ ही उन सभी ने प्रकृति को पोषित करने के लिए दूसरों को प्रेरित करने का संकल्प लिया।

अभियान के परिणामस्वरूप, लड़कियों ने कई व्यक्तिगत जीवन-निर्माण लाभों का अनुभव किया। उन्होंने बिजली, पानी और पेड़ों की देखभाल के बारे में सबक सीखा, लड़कियां अधिक आत्मविश्वासी बन गईं, सार्वजनिक या

निजी तौर पर अजनबियों के साथ संवाद करने का सबक सीखा। देश के लिए कुछ करने, नि:स्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने, गुरु को प्रसन्न करने के आदर्श इन लड़कियों में बोए गए थे। ऐसे समय में जब दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई और शहरीकरण की बड़ी समस्याओं का सामना कर रही है, इन बी.ए.पी.एस. लड़कियों ने आशा की एक नई किरण जलाई है। स्वतंत्रता के अमृत वर्ष में प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलकर देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए लड़कियों द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है।

प्रेरक घटनाएं

- अहमदाबाद के रानिप में रहने वाली अंजना को अपने परिवार के साथ छुट्टी पर बाहर जाना था, लेकिन इन दिनों अंजना को प्रकृति संरक्षण अभियान में शामिल होना था, इसलिए उसने साफ कर दिया कि सेवा करने के लिए बाहर नहीं जाना है। हम टहलने नहीं जाएंगे तो काम हो जाएगा। और यह सेवा हमें दोबारा नहीं मिलेगी! बेटी की बातें सुनकर माता-पिता बहुत खुश हुए। अंजना के पिता ने कहा कि केवल 9 वर्ष की उम्र में एक परोपकारी जीवन को प्रेरित करने और अंजना जैसी कई लड़कियों को पालने के लिए बी.ए.पी.एस. संस्था का मैं आभारी हूँ।
- अहमदाबाद के न्यू नरोड़ा इलाके में बालिकाओं का एक समूह संपर्क के लिए एक घर पहुंचा। घर में सभी का बहुत अच्छा सहयोग मिला। संस्था के कार्य से बहुत प्रभावित होकर सभी ने नियमों को स्वीकार किया। उसके बाद ऊपर उनके घर में डांस क्लासेज लगाई गई थी। तो उसने सामने से कहा कि तुम इन सब लोगों से भी बात करो। वो सभी 20 व्यक्ति हिंदी भाषी थे। उन्होंने लड़कियों की भी अच्छी तरह से बात सुनी और सभी ने एक पेड़ लगाने के नियम को स्वीकार किया।
- कोलवाड़ा बालिका मंडल की सदस्या निष्ठा राजूभाई दरजी के प्रकृति संरक्षण अभियान में शामिल होने के कुछ दिनों बाद उनके गले में घाव हो गया। कार्यकर्ताओं ने उसे दो-तीन दिन आराम करने के लिए कहा क्योंकि पानी भी उसके गले से नीचे नहीं जा सकता था। तब निष्ठा ने कहा कि भले ही मैं बोल न पाऊं। लेकिन मैं लिखने या कार्ड देने की सेवा तो कर सकती हूं! अगर मैं नहीं आई तो मेरी सेवा चली जाएगी! जरूरत पड़ने पर मैं आऊंगी।
- बालिकाओं का एक समूह कैलाश कॉलोनी (अहमदाबाद) गया था। उसी दौरान एक बहन ने गाली-गलौज कर बच्चियों का अपमान करना शुरू कर दिया। बालिका कार्यकर्ता लड़कियों को वहां से दूसरी जगह ले गई और बिना धैर्य खोए संपर्क जारी रखा।
- बी.ए.पी.एस. संगठन द्वारा चलाए जा रहे प्रकृति संरक्षण अभियान से प्रभावित महेमदावाद सिंहुज कन्याशाला की श्री तेजलबेन मेहता कहती है कि संगठन द्वारा बहुत अच्छा कार्य किया जा रहा है। इसमें भी बच्चियां बिजली बचाने, पानी और पर्यावरण बचाने और समझ देने से सम्बंधित गतिविधियां चला रही हैं, यह बहुत अच्छा है। इससे दूसरे बच्चों को भी काफी प्रेरणा मिलेगी। बच्चे देश का भविष्य हैं। अगर वे अब से अभियान के तहत गतिविधि करेंगे तो वे भी करेंगे। जिससे देश और दुनिया का भविष्य उज्ज्वल होगा।
- अहमदाबाद के इसनपुर की बालिकाएँ एक घर संपर्क के लिए गईं। इस सदन में कुल पांच सदस्य थे। बालिकाओं ने घर में रहने वाली हीरलबेहन त्रिवेदी से संपर्क करने के लिए घर में घुसने की इजाजत मांगी। इस बार हीरलबेहन के पति परेशभाई त्रिवेदी भी मौजूद थे। वे भगवद्गीता के पारखी थे। वह पानी और पेड़ों के बारे में बहुत जागरूक थे। इसलिए बालिकाओं का घर में अच्छा स्वागत हुआ। बालिकाओं के हीरलबेहन के पास जाने के बाद परेशभाई ने कहा कि दुनिया में भक्ति से ही क्रांति आती है। एक सच्चा महात्मा ही यह क्रांति ला सकता है। आपके गुरु प्रमुखस्वामी महाराज में इस डोर टू डोर प्रोजेक्ट के साथ घूमने की शक्ति है। इसलिए समाज में क्रांति होगी। फिर उन्होंने भगवद्गीता के श्लोक के आधार पर बात करना शुरू किया। लेकिन संस्कृत का एक श्लोक बोलते-बोलते वे थोड़े अटक गए। उस समय वृंद की नेता वैशाली बहन, जो संपर्क करने गई थीं, ने श्लोक पूरा किया। यह सुनकर वह बहुत प्रभावित हुए। बाद में जब बालिकाओं ने संस्था द्वारा संचालित संस्कृत विद्यालय की बात की तो उन्हें प्रमुखस्वामी महाराज और संस्था के प्रति अपार सम्मान का अनुभव हुआ।
- इस प्रकार, प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह, लाखों लोगों तक पर्यावरण जागरूकता और प्रकृति संरक्षण का संदेश फैलाने वाला यह अभियान बी.ए.पी.एस. बालिकाओं के उत्साह के साथ सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। ◆

प्रकट ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज के विचरण समाचार

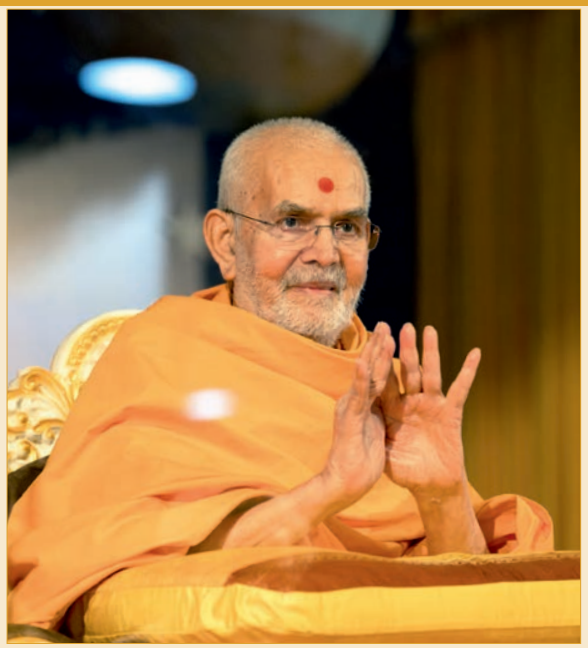

अहमदाबाद में दिव्य सत्संगलाभ देते स्वामीजी...

1-6-2022 से परम पूज्य महंत स्वामी महाराज बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर शाहीबाग अहमदाबाद में बिराजमान होकर संतों-हरिभक्तों को दिव्य आध्यात्मिक चेतना प्रदान कर रहे हैं। दो महीने से अधिक समय से गुरुहरि की निकटता भक्तों के हृदय में दिव्य आध्यात्मिक ज्योत प्रज्ज्वलित कर रही है। मंदिर में नित्य ऐसा दिव्य वातावरण निर्मित होता है, मानो भक्ति की वर्षा हो रही हो! प्रातःकाल ठाकोरजी के दर्शन के लिए स्वामीजी के निवास से उनके दर्शन की दिव्य स्मृतियाँ तथा पूजा दर्शन स्मृतियाँ सबके हृदय में सदैव अंकित रहती हैं। पूजा में युवा संगीतकार-कलाकार भक्ति गीत गाकर अपनी कला को पवित्र करते हैं। बच्चों की ओर से विभिन्न प्रार्थनाएं होती हैं और वह स्वामीजी की कृपा प्राप्त करते हैं।

ठाकोरजी और स्वामीजी के दर्शन के लिए अहमदाबाद और दूर-दराज के प्रांतों से आनेवाले हजारों मुमुक्षुओं का हृदय गुरुहरि को समर्पित है। नियत दिनों में, अहमदाबाद के विभिन्न क्षेत्रों से हरिभक्त-भाविक स्वामीजी के दर्शन के लिए आते हैं।

स्वामीजी के आगमन से पूर्व सभी विद्वान संतों द्वारा सभा में सुनाई जाती कथा का आनंद लेते हैं। स्वामीजी जब नियत समय पर सभागार में पहुंचते हैं तो वातावरण दिव्यता से भर जाता है। ठाकोरजी को आरती-अर्घ्य देने के बाद, स्वामीजी 'योगी वाणी' पुस्तक पर आधारित हार्दिक दिव्य भाषण के साथ सभी को आध्यात्मिक पाठ पढ़ाते हैं। उसके बाद स्वामीजी सभी को समीपदर्शन का लाभ देते हैं। युवा और बूढ़े सभी को इस दर्शन का लाभ मिलता है और वे खुद को धन्य महसूस करते हैं। रवि सत्संगसभा एवं अन्य विशेष सभाओं में बाल-युवा-कार्यकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा स्वामीजी के दर्शन-आशीष प्राप्त करनेवाले हजारों मुमुक्षु उपस्थित रहते हैं। इसके अलावा, स्वामीजी के सान्निध्य में कोई त्योहार-अवसर भी मनाया जाता है, तो यह एक अमूल्य स्मृति चिन्ह बन जाता है।

आइए, हम स्वामीजी द्वारा अहमदाबाद निवास के दौरान विभिन्न अवसरों पर दी गई दिव्य स्मृतियों में अवगाहन करें...

13-6-2022 को अमेरिका स्थित बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण अनुसंधान संस्थान का उद्घाटन मंगल दीप प्रज्वलित करके किया। 19-6-2022 को स्वामीजी की करकमलों से, बी.ए.पी.एस., शाहीबाग, अहमदाबाद मंदिर के परिक्रमा पथ में बनाए गए गुरुशिखरों में ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की मूर्तियों को पुनः प्रतिष्ठित किया गया। इस अवसर पर आयोजित महापूजा विधि के बाद वरिष्ठ संतों ने गुरुवर्यों की पूजा की। स्वामीजी ने प्रतिष्ठित मूर्तियों की वैदिक पूजा की, आरती की और अंत में भक्ति के साथ गुरुवर्यों के चरणों में मंत्रपुष्पांजलि अर्पित की। 21-6-2022 को स्वामीजी ने पाटडी (अहमदाबाद ग्रामीण) में गठित बी.ए.पी.एस. मंदिर में स्थापित की जाने वाली मूर्तियों को वेदोक्त द्वारा विधिपूर्वक प्रतिष्ठित किया गया। 7-7-2022 को, स्वामीजी ने पेरिस (फ्रांस) में नवनिर्मित पंचशिखरीय बी.ए.पी.एस. मंदिर का शिलान्यास किया।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर विभिन्न शिक्षण संस्थानों और आर्ष शोध संस्थान, स्वामिनारायण अक्षरधाम-गांधीनगर द्वारा संयुक्त रूप से उनके अद्वितीय कार्यों को श्रद्धांजलि देने के लिए विभिन्न विषयों पर सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं। इन संगोष्ठियों में बी.ए.पी.एस. संस्थान के विद्वान संत प्रमुखस्वामी महाराज के विश्वव्यापी कार्यों का एक सिंहावलोकन देते हैं, उनके काम से प्रभावित होकर, संगोष्ठी में भाग लेनेवाले कई लोग उनके चरणों में झुकते हैं।

9-7-2022 को, श्री नीलकंठ-विश्वकल्याण- सहस्रनामस्तोत्रम् (रचनाः साधु अक्षरजीवनदास) पुस्तक का विमोचन किया। 14-7-2022 से शुरू होनेवाले हिंडोला उत्सव पर्व के दौरान स्वामीजी ने भी ठाकोरजी को पालना और सभी को विशेष स्मृतियां दीं। दर्शन के लिए मंदिर में आनेवाले भक्तों की एक बड़ी संख्या ने भी गुणातीतानंद स्वामी के साथ भगवान श्रीहरि को एक कलात्मक हिंडोला पर झूला लगाकर विशेष भक्ति अर्घ्य चढ़ाया। यहाँ स्वामीजी के अहमदाबाद निवास के दौरान सत्संग सभाओं में उनके लाभ का एक सिंहावलोकन पेश है...

सेवक सभा

19-6-2022 को स्वामीजी की उपस्थिति में शताब्दी महोत्सव- एक निशान के केंद्रीय विचार के साथ एक विशेष बैठक आयोजित की गई। यज्ञप्रियदास स्वामी ने बैठक में प्रेरक भाषण दिया। अन्य संतों ने भी उपदेशों में स्वयंसेवकों की समर्पण कथाएँ प्रस्तुत कीं। बैठक में मौजूद अहमदाबाद कलेक्टर श्री संदीप सगाले ने इस अवसर पर भाषण में स्वयंसेवकों की सेवा की सराहना की।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह पर खड़े पांव सेवा में विभिन्न विभागीय सेवाओं का प्रदर्शन करते हुए स्वयं सेवकों द्वारा एक परेड का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने इन सभी विभागों की शोभा बढ़ाई थी। बैठक में रंगारंग भक्ति नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए गए। गुरुहरि की उपस्थिति में सभी सेवकों ने शताब्दी सेवा करने का निश्चय किया। अंत में स्वामीजी ने सभी की सेवा की प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद दिया।

अभिवादन समारोह

26-6-2022 को स्वामीजी की निश्रा में बाल अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर 8 से 22 मई तक आयोजित नशामुक्ति अभियान एवं प्रकृति संवर्धन अभियान में शामिल बच्चों का सम्मान समारोह विशेष व प्रेरणादायी रहा। गर्मी की छुट्टियों को छोड़कर लगातार 15 दिनों तक चिलचिलाती धूप का सामना करते हुए बच्चों ने नशामुक्ति कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। इसी के फलस्वरूप आयोजित आज के अभिनंदन समारोह में बच्चों ने विभिन्न प्रेरक प्रस्तुतियां देकर स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वामीजी ने सभी बच्चों पर प्रसन्नता की बौछार की क्योंकि बच्चे विभिन्न बैनरों के साथ मंच से गुजरे, जिसमें व्यसन से मुक्त होने, मांसाहारी भोजन छोड़ने और प्रकृति के संरक्षण का संदेश था। स्वामीजी ने बच्चों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए। अंत में स्वामीजी ने बच्चों के उत्कृष्ट कार्य की सराहना की और उन्हें आशीर्वाद दिया।

रथ यात्रा उत्सव

1-7-2022 को परंपरा के अनुसार अहमदाबाद के जगन्नाथ मंदिर की 145वीं रथ यात्रा के अवसर पर तीन रथों पर विराजमान श्री कृष्ण-सुभद्रा-बलदेवजी अहमदाबाद को पवित्र करने के लिए अहमदाबाद से निकल पड़े। इस रथ यात्रा में बी.ए.पी.एस. संगठन की ओर से ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह की घोषणा करने वाला एक रथ भी शामिल था।

परम पावन महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में भी आज शाहीबाग मंदिर में रथ यात्रा उत्सव मनाया गया।

सुबह से ही हॉल में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी जो आज के त्योहार का लाभ लेने के लिए बड़ी संख्या में पहुंचे थे। स्वामीजी की प्रात: पूजा के दौरान संत-युवाओं ने रथयात्रा के पर्व पद गाकर रथयात्रा का वातावरण समृद्ध किया। पूजा के बाद स्वामीजी ने अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की पूजा की। उसके बाद, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को एक छोटे से यंत्रचालित रथ पर आरूढ़ किया गया। इस दर्शन का आनंद लेने के बाद युवा और बूढ़े सभी समर्पित हो गए।

इस अवसर पर स्वामीजी ने योगीजी महाराज की रथयात्रा का स्मरण किया और विशेष आशीर्वाद देते हुए कहा, 'हमें अपने जीवन रथ की बागडोर भगवान के हाथों में देनी है। अगर हम इस तरह नेतृत्व करते हैं तो चिंता न करें। लेकिन ऐसा कब होता है? जब हम मन-इन्द्रिय-विवेक को भगवान के हाथों में सौंप देते हैं। हमारा भक्ति संप्रदाय है। हमारे जीवन की अगुवाई उनके हाथों में थमाने का अर्थ है शांति। इस तरह हम उनकी पूजा करने के बजाय अक्षरधाम में बैठते हैं।'

आशीर्वाद समाप्त होने के बाद स्वामीजी मंदिर पहुंचे। स्वामीजी ने ठाकोरजी के दर्शन किए और उत्सव के अनुसार सजाये गए प्रत्येक कमरे में आरती की। इसके बाद शुरू हुई रथ यात्रा। स्वामीजी कलात्मक रथ पर विराजमान थे। संत प्रदक्षिणापथ पर चलनेवाले रथों के पीछे मधुर ध्वनि के साथ उत्सव कीर्तन गाते थे। मंदिर की दो परिक्रमा पूरी करने के बाद स्वामीजी ने सभी को दिव्य दर्शनसुख दिया। भक्तों ने हॉल में स्क्रीन पर इस लाइव प्रसारण का आनंद लिया।

युवक दिन

3-7-22 को स्वामीजी की पवित्र उपस्थिति में युवा दिवस मनाया गया। प्रभु तारे भरोसे जीवन नैया के केंद्रीय विचार के साथ आयोजित युवा सभा में युवाओं ने प्रेरक संवाद-नाटक प्रस्तुत किया और गुरुहरि का प्रसन्नता प्राप्त की। युवाओं द्वारा प्रस्तुत नाविक नृत्य भी प्रभावशाली था। पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने प्रेरणा-वचन कहे।

स्वामीजी को एक प्रश्न प्रस्तुत किया गया: 'प्रमुखस्वामी से हम क्या सीखें?' स्वामीजी ने उत्तर में लिखा: 'गुरु के वचनों में अत्यधिक विश्वास रखना।' अंत में स्वामीजी ने सभी को आशीर्वाद के साथ

धन्यवाद दिया।

चातुर्मास मर्म-महिमा सभा

10-7-22 को स्वामीजी की उपस्थिति में चातुर्मास मर्म-महिमा पर एक विशेष सभा का आयोजन किया गया। चातुर्मास विशेष भक्तों के माध्यम से भगवान की पूजा करने का एक अनमोल अवसर है जैसे धार्मिक ग्रंथों को पढ़ना, श्रव्य श्रवण, मंदिर-दर्शन, अधिक मालाजाप, दंडवत, प्रदक्षिणा, विशेष व्रत-तप और गुणकथन।

आज की सायंसभा के आरंभ में विवेकसागरदास स्वामी ने व्याख्यान में चातुर्मास की अन्य महिमाओं का वर्णन किया। स्वामीजी के आगमन के बाद विशेष कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हुआ। देवशयनी एकादशी से लेकर देवप्रबोधनी एकादशी तक पवित्र पर्वों का महिमामंडन और विभिन्न भक्ति नृत्य उसी के अनुसार किए गए। पूरी शृंखला इस त्योहार की यादों से भरी हुई थी। अंत में, दर्शकों ने नियमों का पालन करने के सुराखाचर के दृढ़ संकल्प पर संवाद का आनंद लिया। यह सभा सभी के लिए यादगार बनती जा रही थी। चातुर्मास के तहत, हरिभक्तों ने विभिन्न नियमों को अपनाकर विशेष भक्ति करने की ठानी। आशीर्वाद के अंत में स्वामीजी ने चतुर्मास की स्तुति कर सभी को विशेष भक्ति करने का आह्वान किया।

बाल दिवस

17-7-22 को आयोजित रविसभा बाल दिन के अवसर पर विशेष अवसर बन रहा था। सभा के शुरू से अंत तक बच्चों का दबदबा रहा। आज का बाल दिवस विशेष और प्रेरक रहा, जिसमें शांतिलाल आदर्श हमारा के बीच के विचार के साथ ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के बचपन की घटनाओं को दर्शाया गया। जिसमें आदर्श छात्र शांतिलाल, शांतिलाल की तपस्या, नियम पालन दृढ़ संकल्प, शांतिलाल का घर त्याग आदि कार्यक्रमों को कवर करते हुए बच्चों ने चर्चाओं, लघु संवादों, नाटकों की आकर्षक प्रस्तुति के माध्यम से प्रमुखस्वामी महाराज के बचपन के गुणों को दिखाया। अंत में स्वामीजी ने प्रमुखस्वामी महाराज के गुणों का आस्वाद चखाकर सभी को आशीर्वाद दिया। ◆

अभिनंदन — **बी.ए.पी.एस. परिवार का गौरव बढ़ानेवाले तेजस्वी हरिभक्त को अभिनंदन...**

परम भगवदीय श्री प्रदीपजी पारीक, जयपुर नगर निगम में रजिस्ट्रार हैं। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज के कृपापात्र श्री प्रदीपजी पारीक ने हाल ही में एक ऐसी पहल की है जिससे ग्रेटर नगर निगम से शादी का सर्टिफिकेट बनवाया जा सकेगा।

उनकी ओर से जारी किए गए पत्र में कहा गया है कि शादी का सर्टिफिकेट जारी करने से पहले नवविवाहित जोड़ों को 7 वचन यानी 7 प्रतिज्ञाएं दिलाई जाएंगी। उन्होंने 7 वचनों की लिस्ट भी बनाई है। जैसे कि -

1. प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वभाव सुधारेगा ताकि परिवार में हंमेशा शांति बनी रहे।
2. छोटे-बड़े सभी का आदर करना होगा।
3. सर्वत्र विवेकपूर्ण वाणी बोलें।
4. बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार देंगे, तो भविष्य उज्ज्वल बनेगा।
5. सुख-दुःख में भगवान को कर्ताहर्ता समझें, प्रार्थना करें, घर में नित्य सत्संग और भक्ति करते रहें। उससे परिवार में शांति रहेगी।
6. घर में किसी की भी भूल हो, उसके प्रति उदार बनना होगा। भूल को भूलना सीखें।
7. सहनशील और अनुकूल बनकर बुजुर्गों की सेवा करें, हठाग्रह छोड़ें तो घर में एकता रहेगी।

इन सात सूत्रों के मुताबिक पूरे शहर में औसतन रोजाना करीब 100 से ज्यादा शादी सर्टिफिकेट बनाए जाते हैं। शादी का सर्टिफिकेट बनाने के लिए आवेदन पत्र, शादी का कार्ड, एफेडेविट, गवाह, फोटो के साथ आवेदन करना होता है। इसके बाद दस्तावेजों की जांच करके नगर निगम सर्टिफिकेट जारी करता है।

आए दिन पारिवारिक कलह के मामले बहोत सामने आ रहे हैं। मैरिज सर्टिफिकेट बनाने से पहले यह पहल इसलिए की गई है ताकि समाज सुधार में एक कदम उठाया जा सके। इसके लिए पति पत्नी को सात प्रतिज्ञा दिलाई जाएगी। यह एक अच्छी पहल है ताकि परिवार खुशहाल रहे। मैरिज सर्टिफिकेट तभी मिलेगा जब 7 प्रतिज्ञाएं रजिस्ट्रार के सामने लेंगे। हालांकि यह कोई सरकारी अध्यादेश नहीं है।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी वर्ष उपक्रम में श्री प्रदीपजी पारिक को समाज सुधार के बेहतरीन कदम उठाने के लिए हार्दिक अभिनंदन...

अफ्रीका खण्ड में आयोजित कार्यकर्ता शिविर : मार्च-अप्रैल, 2022

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव का उद्घोष विश्वभर में हो रहा है। हाल ही में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की आज्ञा से पूज्य विवेकसागरदास स्वामी ने अफ्रीका खंड के विविध देशों में पधारकर सत्संगमंडलों में महोत्सव का उद्घोष किया था। साथ ही साथ पूरे अफ्रीका के कुल 17 देशों में अवसर के केंद्रीय विचार के साथ चल रहे सत्संग आंदोलन में सेवारत कार्यकर्ताओं के लिए कुल 6 देशों में ढाई दिवसीय शिविर आयोजित किए गए। शिविर में कुल तीन सत्र हुए, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव का अर्थ है – गुरु को याद करने का अवसर, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव का अर्थ है – गुरु की सेवा करने का एक अनूठा अवसर, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव का अर्थ है – गुरु की महिमा को दुनियाभर में फैलाने का अवसर। पहले सत्र में स्वामीजी के अनंत गुणों का स्मरण किया गया, जिसमें विभिन्न माध्यमों से स्वामीजी के महान पुरुषार्थ का स्मरण किया गया। दूसरे सत्र में बताया गया कि शताब्दी उत्सव एक अनूठा अवसर क्यों है। प्रेरक प्रस्तुति दी गई कि इस उत्सव में सेवा करने से हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा, यतकिंचित गुरु संतुष्ट होंगे, और गुरुहरि महंत स्वामी महाराज प्रसन्न होंगे। तीसरे सत्र गुरु की महिमा को दुनिया में फैलाने का अवसर के तहत एक वर्कशॉप में दिखाया गया कि सत्संग और सत्पुरुष के योग में आने से हमें कितना फायदा हुआ है। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए स्वामीजी के स्तम्भ रहे कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों का सुन्दर प्रस्तुतिकरण किया गया।

एक कार्यकर्ता के रूप में, विभिन्न सत्संग सेवाओं में प्रकाशमान प्रमुखस्वामी महाराज की कार्यप्रणाली और दृष्टिकोण को प्रवचनों के माध्यम से और स्पष्ट किया गया। शिविर के समापन सत्र ने शताब्दी अवसर की विशिष्टता, इसकी सेवा में शामिल होने की तैयारी पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस शिविर कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को संतों के व्याख्यान, विभिन्न प्रस्तुतियों, कार्यशालाओं, संवादों, ध्यान और लेखन के माध्यम से शताब्दी महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। समय-समय पर कार्यकर्ताओं ने भी विभिन्न प्रदर्शनों में भाग लिया। पूज्य विवेकसागरदास स्वामी के अनुभवात्मक भाषणों और महंत स्वामी महाराज के कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद ने सभी को गौरव और समर्पण के साथ चित्रित किया। पूरे अफ्रीका के छह देशों में आयोजित शिविरों में, कार्यकर्ताओं को लाभ हुआ। यह शिविर मलावी देश के लिलोंग्वे शहर में आयोजित किया गया था, जिसमें 179 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। लुसाका, जाम्बिया में आयोजित किया गया, जिसमें जाम्बिया और कांगो के 106 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। दक्षिण अफ्रीका के लेनेसिया में एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें दक्षिण अफ्रीका, बोत्सवाना के 276 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। केन्या के नैरोबी शहर में आयोजित किया गया, जिसमें केन्या और इथियोपिया के 478 कार्यकर्ताओं ने तंजानिया के म्वांजा शहर में आयोजित किया गया था, जिसमें 232 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। युगांडा के कंपाला शहर में शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें युगांडा, रवांडा, बुरुंडी के 240 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस प्रकार, पूरे अफ्रीका खण्ड में सत्संग गतिविधियों के कुल 1,511 कार्यकर्ता इस अवसर शिविर से लाभान्वित हुए। ◆

नूतन बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिरों में आयोजित मूर्ति प्रतिष्ठा उत्सव

अनगिनत लोगों के जीवन में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का प्रकाश देनेवाले ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज इस वसुंधरा पर अवतरित दुर्लभ दिव्य संत थे। इन महापुरुष ने बी.ए.पी.एस. नए मंदिरों के निर्माण द्वारा गुजरात के आंतरिक आदिवासी गांव से अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप और अफ्रीका के आधुनिक शहरों में भगवान श्रीस्वामिनारायण प्रबोधित वैदिक अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का प्रकाश फैलाया है। लाखों लोगों के हृदय में अध्यात्म की लहर फैला दी है। उनके शताब्दी वर्ष में उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी परम पूज्य महंतस्वामी महाराज के आशीर्वाद से बनाए गए नए मंदिरों के मूर्तिप्रतिष्ठा उत्सवों का संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है।

एरथाण, सूरत

जायवा, ध्रोल

लीरा, युगान्डा

थीका, केन्या

हिंगटिया, पोशीना

शियावाडा, गांधीनगर

कपासी, ता. ओलपाड

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था का शैक्षणिक क्षेत्र में एक नूतन प्रदान जूनागढ़ में रेसिडेन्शियल विद्यामंदिर का प्रारंभ

पिछले कुछ वर्षों में, सोरठ प्रदेश के भीतरी गांवों से आनेवाले छात्रों की संख्या में वृद्धि के कारण, उन्हें स्कूलों में प्रवेश पाने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। इसलिए जूनागढ़ में आवासीय विद्यालय की आवश्यकता उत्पन्न हुई। परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने जूनागढ़ के बी.ए.पी.एस. मंदिर परिसर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त विद्यामंदिर परिसर का निर्माण कर इन छात्रों की चिंता दूर कर दी है।

पूज्य कोठारी भक्तिप्रियदास स्वामी की उपस्थिति में 3-5-2022 (अक्षय्यतृतीया) के पवित्र दिन पर, जूनागढ़ में इस नए सुसज्जित बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण विद्यामंदिर परिसर का उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन के पश्चात् पूज्य कोठारी भक्तिप्रियदास स्वामी ने सुबह ठाकोरजी के साथ निर्देशकों के द्वारा विद्यालय की कक्षाओं, प्रार्थना कक्षों, कार्यालयों के साथ साथ विद्यामंदिर परिसर की सुविधाओं और व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर आयोजित सायंसभा में ज्ञानवत्सलदास स्वामी ने धार्मिक शिक्षा के विषय पर विशाल जनसभा को संबोधित किया।

20 बीघा के कुल क्षेत्रफल में फैले इस बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण विद्यामंदिर की शुरुआत इसी वर्ष जून से होगी, जो अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है और नर्सरी से सेंट पीटर्सबर्ग तक गुजराती-अंग्रेजी दोनों माध्यमों में कक्षाएं प्रदान करता है। 12वीं कक्षा में विज्ञान/वाणिज्य तक कुल 2,400 छात्रों को शिक्षा प्रदान करने की क्षमता है। इसके अलावा, स्कूल में 1,000 छात्रों के लिए एक छात्रावास और खेल सुविधाओं के साथ विशाल खेल के मैदान भी हैं।

पिछले दो महीनों से अहमदाबाद में संत–हरिभक्त गुरुहरि महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति का आनंद ले रहे हैं। उनकी उपस्थिति में अनेक पर्व–कार्यक्रम आयोजित किए गए। 13 जुलाई 2022 को गुरुपूर्णिमा का पवित्र अवसर उनकी उपस्थिति में दिव्य रूप से मनाया गया। शताब्दी की घोषणा करते हुए हजारों हरिभक्तों ने गुरुहरि महंतस्वामी महाराज के चरणों में गुरुवंदना की और कई अन्य भक्तों ने लाइव प्रसारण के माध्यम से गुरु–दर्शन की पेशकश की।

Swaminarayan Prakash Hindi, August-2022, Published on 10-08-2022, Posted at Ahmedabad, P.S.O. 10th on Every Month.
Regd No. GAMC-719/2021-2023, Valid up to 31-12-2023. RNI No. 43538/85.
Licensed to Post Without Perpayment No. PMG/NG/029/2021-2023, Valid up to 31-12-2023.

(1–4) महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से अहमदाबाद में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह की तैयारी जोरों से चल रही है। अहमदाबाद के पश्चिम में 600 एकड़ भूमि में विशाल स्वामिनारायण नगर एक उत्सव स्थल के रूप में आकार ले रहा है। 24–7–2022 को इस स्वामिनारायण नगर के मुख्य प्रवेशद्वार पर पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी तथा भारत के माननीय गृहमंत्री श्री अमितभाई शाह ने संतों और गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में कलश स्थापना की। श्री अमितभाई ने प्रमुखस्वामी महाराज का स्मरण करते हुए कहा कि पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज का कार्य जीवन–निर्माण और राष्ट्र–निर्माण का था। इस पर्व से दोनों पूरे होंगे। (5–6) महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से अहमदाबाद के जगतपुर में एक नया शिखरयुक्त मंदिर बन रहा है, जिसका शिलान्यास समारोह 1 जुलाई को पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी और विवेकसागरदास स्वामी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। उस घटना के दृश्य...

Printed and Published by Sadhu Swayamprakashdas on behalf of Swaminarayan Aksharpith and Printed at Swaminarayan Mudran Mandir, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004 and Published from Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Editor - Sadhu Swayamprakashdas